ज्ञानतरङ्ग ॥

گیان ترنگ

जिसको

शाहजहांपौरीय सरहीग्रामनिवासि कायस्थबंशो-
द्भव बख्शीरामात्मज मंगलदास ने अत्युत्तम
तीन खण्डों में निर्मित किया

जिसके

प्रथम खण्ड अर्थात् ज्ञानतरंगमें मन बुद्धि के सम्वाद
[त]था प्रश्नोत्तर की रीतिसे संसार और तज्जनित प-
[दार्थों] के अनित्यत्वका वर्णन-द्वितीय खण्ड अर्थात्
[मं]गलबिनोदमें सगुणपक्ष निर्बाण शिक्षाका सविस्तार
वर्णन-तृतीय खंड अर्थात् सर्वसिद्धांत सप्तशतिका में
प्रकृति पुरुष का सम्यक् बिचार वेदांत ज्ञान उत्तम २
छन्दों में वर्णित है

वही

आर्य्यजनपूजित वैदिकमततत्पर श्रीमान् मुंशी
नवलकिशोरने आर्य्यावर्त्तनिवासिज्ञानाभिलाषियों
के हितार्थ

लखनऊ

स्वकीय यन्त्रालय में मुद्रित करवाया
जून सन् १८८६ ई० ॥

दूसरीबार ३०००

इस मतब्रे में जितने प्रकारके वेदान्त भाषाकी पुस्तकछपीहैं उनमेंसे कुछ इसमें लिखी हैं ॥

—❋—

योगवाशिष्ठभाषा

दोभागोंमें जिसमेंवशिष्ठजीने रामचन्द्रजी से वैराग्य,मुमुक्षु,उत्पत्ति, स्थिति,उपशम, निर्वाणादि छः प्रकरणोंमें आत्मयोगब्रह्मज्ञान लखाकर सन्देहदूरकियाहै,और यह पुस्तक आदिकबिबाल्मीकिजीकीबनाईहुईहै कि उन्होंने भरद्वाज से उपदेश कियाहै संस्कृतमें श्लोकबद्धथी पर पहले जब यह भाषा ग्रन्थ हमको मिलाथा भाषा इसकीठीक न थी सो कारख़ानेकी तरफ़से पंडित प्यारेलालजीसे इसकी बोलियां सुधरवाकर और उनके पुनः अवलोकन से छापागया जिससे यहग्रन्थ अत्यन्तसुगम होगया ॥

पारसभाग

जिसमें वेदांतमतानुसार काम,क्रोध,मद,लोभ, मोहाहंकारके नाश का उपाय और दान, व्रतकरनेके लाभ औरप्रीति,दया,सत्यासत्य, चोरी ईर्षादि बहुतसे देहसम्बंधी कर्मोंका निर्णय,इतिहास, कथा औरदृष्टांत युक्तहैं जो छापेख़ानेको अयोध्यानिवासि युगलानन्यशरण वैकुण्ठवासी के पुस्तकालय से उनके स्थान।पन्नमहात्मा जानकीवरशरणजीके द्वारा बड़े परिश्रमसे प्राप्तहुई अब हम थोड़ीसी बातें इस पुस्तक के अन्तर्गत बिषयोंकी महात्माओंकी रुचिकेलियेलिखतेहैं साधनके कालकाबर्णन आत्मसत्ताके अभ्यासका बर्णन, जीवकी सेना, जीवका स्वभाव,जीवके पराधीनता का बर्णन, भगवत्कीपहिंचान,भगवत्की निर्लेपताका कथन तत्व औरनक्षत्रोंका व्याख्यान,मायाकाबिस्तार,छल औरउसका खंडन, परलोककी पहिंचान, मृत्युका कथन, जीवकी अखण्डताका बर्णन,प्राण चेतना, चैतन्य कलाकी कथा,यममार्गके कष्ट,नास्तिकोंकेमतकाखण्डन, भगवत्की प्रतीति,आचारधर्म, ज्ञानदेने,दानब्रतकरने, पाठकरने,ध्यान लगाने, स्मरणकरने, साधुसंगति,एकांत में भजनकरने का बर्णन,कठोर वचनके त्यागनेकाकथन,कामबासना और इच्छाकेत्यागकरनेके शुभफल अधिक बोलनेके बिघ्न,क्रोध,ईर्षा, माया की प्रीति,तृष्णा, कृपणता



अथ ज्ञानतरंग ॥

सो० ॥ शीतनाथकीबाल तासुतनयशिरचन्द्रधर । बाँधवतारककाल तिहुँपुरपूज्यसुविघ्नहर ॥ बन्दत तवपदधूरि करौ कृपा वारणबदन । उपजैआनँदभूरि देहुसुमति हरिकुमतितन ॥ दो० ॥ हैअखण्ड अविनाशजो पुरुषपुरातनईश । वेददेव मानसउरग ध्यावत जाहिमुनीश ॥ चौ० ॥ वेदचारि जेसबजगजानै । ऋग यजु साम अथर्व बखानै ॥ जोऋगवेद सोऔरबतावै । यजुर्वेद कुछ औरसुनावै ॥ सामवेदकी अकथकहानी । समुझहिंचतुर न जाइ बखानी ॥ कहैअथर्वण आनप्रकारा । एकब्रह्मकृत चारिबिचारा ॥ दो० ॥ चारौध्यावत एकही बरणतगुणगंभीर । ज्यहिमारग सचुपावज्यहि गहेसुमारगधीर ॥ चौ० ॥ नहिंआश्चर्य विबुधमनलावैं । चारौमारग सत्यबतावैं ॥ ऋषयतपेश्वरादि संन्यासी । वैष्णवमुड़िया औरउदासी ॥ निजमति लखिसताहि सबगावैं । कोऊतासु पार नहिंपावैं ॥ देवसुरेश आदि बुधिमाना । गावहिंजासु प्रताप प्रमाना ॥ शेषसहसयुग रसनाजाही । बरणतजाहि नअन्तकुहाही ॥ व्यासआदि मानस तनुधारी । विविधभांति जिनकथा पसारी ॥ तिनहुँनभेदपाव ज्यहिकेरा । तपकीन्होंसहिदंडघनेरा । निशिचरआदि महाबलवाना । यवनादिक जे अधिक सुजाना । जिनकी संज्ञा असुरन माहीं । वेदपन्थडोलतते नाहीं ॥

मानस नहिं पशु नहिं देवा। नहीं भुजंग करिय ज्यहि सेवा॥ व्यापक सकल सृष्टिमहँ ऐसे। शोणित सब शरीर महँ जैसे॥ सबके गुण अवगुणसो देखै। पाप पुण्यकी ल्यखनी लेखै॥ पापी नहिं धर्मातम सोई। चाहत जौन तुरतसो होई॥ जोतुम ब्रह्मा विष्णु बखाने। शंकर कहँ ईश्वर करिजाने॥ तेपरमातम पद अधिकारी। सो निर्णय सबकहब अगारी॥ अब सुन ज्यहिबिधि सों येभयऊ। जौनी बिधि ईश्वरपद लयऊ॥ अरु ज्यहिभांति सृष्टिनिर्माणा। करिचौरासीयोनि प्रमाणा॥ जवनधरा ब्रह्माण्ड पतारा। सत रज तम गुण कोउ न प्रचारा॥ ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर नाहीं। गणपति फणपति कोउ न तहांहीं॥ अग्नि बायु जलदेव न नागा। वेद ग्रंथ कोउ नहिं अनुरागा॥ नहिं मानस नहिंसर्प कराला। जीवजंतु नहिंकाक मराला॥ दो०॥ विद्या चौदह तबनहीं नहिं हनुमत न सुरेश। नहिं नारद शारद चतुर नहींभये असुरेश॥ चौ०॥ बरुणकुबेर न तब यमराजा। जाति धर्म नहिं एकौसाजा॥ तपीजपी नहिं मुनि संन्यासी। उदय न चन्द्र सूर सुखरासी॥ सकल पसार तिहूंपुर जोई। तब न कछू जानो मनसोई॥ इन्द्रीआदि ज्ञान विज्ञाना। मोहक्रोध कछु नाहिं बखाना॥ तब निज एक चराचर साईं। निराकार महँ बैठगुसाईं॥ स्वइ परब्रह्म वेद जो गावै। बार बार ज्यहि शम्भु मनावै॥ इच्छा कुछ ताके जो आई। सोमाया यह जगत कहाई॥ फिरिके सुखद शब्दयकबोला। ओंकार यहमन्त्रअमोला॥ दो०॥ ताते ब्रह्मा विष्णु अरु उपजे शुभत्रिपुरारि। निराकार महँ बासलिय तीनोंजन सुखकारि॥ चौ०॥ मायाबहु बिचारिकरिहारी। ताबश भयो न एक मुरारी॥ तब ओंकार वेदलै आई। तिन कहँ दै यहिविधि समुझाई॥ कह्यो सृष्टिकी रचना करहू। आज्ञावेद शीशपर धरहू॥ ब्रह्महि कीन्ह बनावनहारा। शंकर शिरहन्तक पदधारा॥ बिष्णु महा ज्ञानी गुणरासी। प्रतिपालक भो रमाबिलासी॥ पांच तत्त्वकरि सृष्टिउपाई।

बिबिध भांति कीन्हीनिपुणाई ॥ तब त्रैगुण दिय वेद बताई। ब्रह्मा रजगुण लीन्हसिधाई ॥ तमगुण शिव किय अंगीकारा। सतगुण हरि तनु कीन्हप्रचारा ॥ दो०॥ यहि बिधि तिहुंगुण तिहुं पुरुष एक एक महँ लीन। ब्रह्मपुरी महँ बैठि पुनि विश्व रचन चित दीन (मनउवाच)॥ चौ० ॥ जो तुम कहौ ब्रह्मपुरनामा। जहां बिरंचि कीन्ह निजधामा ॥ का सो पुरी रहै बिधि आगे। बैठि जहां निज कारज लागे (बुद्धिरुवाच) प्रथम ब्रह्मपुर लीन बनाई। तापाछे पुनि सृष्टिउपाई,॥बरुण कुबेर इन्द्र यमराजा। अग्नि वायु शशि सूर समाजा ॥ धरा पताल स्वर्ग इत्यादी। रचे देव अरु दैत्यबिषादी ॥ मनुज उरगपशु खग सुबनाये। वेदधर्म कहि सकल बुझाये ॥ जाकहँ जौन ठाम बिधि दयऊ। तहां सुशोभित सो पुनि भयऊ ॥ यहि बिधि सृष्टि सकल उपजाई। बहुत भांति करि बिधि निपुणाई (मनउवाच) दो० ॥ प्रथम कहा तुम कहौपुनि विष्णु भयो जिमिईश। सो अब मोहिंबिचारि कहु नावों तव पद शीश (बुद्धिरुवाच) सामवेद यहकहतहै तीनिबातकोज्ञान। तत्त्व मसीये तीनि पदजानत कोइसुजान॥ चौ० ॥ तत्पद ईश महा सुखकारी। जीव भयोत्वंपद अधिकारी॥ असिपद ब्रह्मजो प्रथम बखाना। निर्गुण निराकार भगवाना ॥ जाहि जपहिँ हरि हर विधि देवा। निशि दिन जासु करैं अति सेवा॥ सबमें लिप्त सबनते दूरी। सब जीवनकर जीवनमूरी ॥ दो० ॥ ये तीनों पुनिएकहैं भेद नहींहै नेक। जिमि छाया द्रुम जगतमें कोकरि सकै विवेक ॥ चौ० ॥ भयोपरन्तु भेदयहि तेरे। आपेकविन सो लखेघनेरे॥ हरिमाया ज्यहिजगत नचायो। काहू जीव जीतिनहिँ पायो ॥ भे मायावश विषय बिलासी। तमगुण गहे भये दुखरासी ॥ आपुहिभूलि मया लपिटाने। मोह आदि जिनदेह समाने ॥ सुनुमनते सबजीव बखाने। कर्त्ताक्रिया कर्म नहिँजाने ॥ ज्यहि मायानिज बशकरि लीन्ही। बिबिध भांति बिष जीवहिदीन्ही ॥ तमरजत्यागि गह्योगुण साँचा। बिषय राग

मन जासु न राँचा॥ कामक्रोध मोहादिक बाँधे। आपनपद निज करतल साँधे॥ सो सच्चिदानन्द गुणरासी। तत्पद कहो सो रमा बिलासी॥ यहिबिधि विष्णुईश पदपायो। ज्यहिवश वेदपुराणन गायो॥ स्वइ अवतार सृष्टिमहँ धरई। बिबिध भाँति लीला सो करई॥ जब बहुपाप धरा ग्रसिलेई। सकैन भार पाप सोखेई॥ तब नारायण पास पुकारै। बिबिध भाँति अस्तुति अनुसारै॥ तासु टेरसुनि रमाविहारी। धरैंमनुज तन जनदुख हारी॥ ज्यहि बिपरीत वेदतेपावैं। ताकहँ हति यमलोक पठावैं॥ देइँबताइ सुपंथ जीवकहँ। बहुज्ञानी गुणखानि जगतमहँ॥ दो०॥ अब सुनु असिपद ब्रह्मको निर्णयमन चितलाय। जाहिसुने संदेहतुव बिबिध भाँतिबहिजाय॥ असिपद पूरणब्रह्महै निराकार जुनिरेह। व्यापक सबजगमें रहै सत्यजानु मनयेह॥ चौ०॥ जीवईश दूनों महँ व्यापै। ज्यहि बहुभाँति सुवेद प्रलापै॥ ईशजीवजो समकहि दीजै। तौ बड़दोष शीशपर लीजै॥ तत्पदमनो सिन्धु परमाना। बिंदु समान जीव अनुमाना॥ असि पद मनो नीर बुधिमाना। दोनोंमांझ समान समाना। अथवा तत्पदज्यों नरभूपा। त्वंपदहै किसानके रूपा॥ मानस असिपद कहतसुजाना। यहिबिधि तीनोंपद परमाना॥ निजआतम खोजैजो भाई। सो निरगुण पद महँठहराई॥ श्रद्धा सहित विष्णु लवलावै। सोई सगुण पंथ कहावै॥ दो०॥ दूनोंपंथ पुनीतअति भक्तिमुक्ति दातार। अब जो मनसंदेह कछु कहुसो कहौंबिचार॥ (मनउवाच) अधिक भयो संदेहम्वहिँ अबसुनु बुधि मनलाय। करि बिस्तार बताइये सब शंका मिटिजाय॥ भाषोंसबमें एकरस पारब्रह्म भगवान। द्वैतभाव वाके महीं सो मानौ परमान॥ अब कहु रूपस्थूलतैं ईश धरेहैजोय। कैसेवाकी देहमें तिहुँपुर बर्तनहोय॥ (बुद्धिरुवाच) सुनुतोसों अबकहौं बुझाई। जिमिसस्थूल रूपकृत साँई॥ शीश तासुआकाश बिराजै। पवन श्वासमहँ शोभासाजै॥ सूरज चंद्र नयन उजियारा। कालरूप भ्रुववंक पसारा॥ पलकचालिनिमि

द्यौस कहावै। अग्नि तासुमुख शोभापावै॥ मांसहिंधरारुधिरजल धारा। पर्वत अस्थि बनस्पति वारा ॥ चरण पताल हृदय करतारा। द्वैभुज हरिहररूप सम्हारा ॥ सकललोकता उदरसमाने। माला मेघशुक्रता जाने ॥ अलख अरूप अनादि कृपाला । धरे विराट रूपकृत ख्याला॥ दो०॥ होयविधाता आपुस्वइ रचै सृष्टि बहुभांति। थावर जंगमजीव जे बहु विधि नानाजाति ॥ बहुरि आपुह्वै रमापति रक्षत सबको धाय। शंकरह्वै संहारकृत सो प्रभु त्रिभुवनराय॥ (मनउवाच) याविधि धरकेरूपको करतख्याल बहुआहि। यहमोको समुझायकहु कबत्यागतहैं ताहि॥ (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ भलिपूछ्लितैं बातबिचारी । हौंयह बात कहौं निरधारी॥ थिरह्वैसुनुतजि दुबिधाजीकै। जसजानोंतसकहौंभली कै॥ जाहि विरंचि कहत कवि ज्ञानी । तासु आयुपर घटितकहानी॥ आयुदीय वर्ष शतकेरी। पाई विधि काली न घनेरी॥ सतयुग त्रेताद्वापर जानो। कलियुग सहित प्रमाण बखानो॥ सत्रह लख बसु विंश हजारा। कृतयुग की परमाण बिचारा॥ जहँ चहुं चरण धर्मके राजैं। सुखद चारि अवतार बिराजैं॥ सहसछानबे द्वादश लाखा। त्रेतायुग परमाणसुभाखा॥ तीनिपादशुभधर्म समेता। त्रैअवतार धरे हरि त्रेता॥ चौंसठि सहस लक्षवसु जाहीं। द्वापरयुग येवर्ष सिराहीं ॥ द्विपद धर्म तहँ वेदबताये। द्वै स्वरूपहरि धरे सुहाये॥ बत्तिस सहस लाखपुनि चारी। कलियुग की परमाण बिचारी॥ धर्म चरणतहँ एक कहोई। एकबार अवतारसुहोई॥ जामहँ नरयुवतीहैं जोई। मारग वेद चलत कोइ कोई॥ रहै न लीक धर्मकी भाई। महादुखित नरनारि तहांई॥ निजनिज धर्म सबै परित्यागे। आय धर्मके मारग लागे॥ दो०॥ तेंतालिस लख सहस नख वर्षें जबचलिजाय। एकचतुर्युग होत तब कहत सकल कविराय॥ चौ०॥ जाय हजार चतुर्युग बीती। होय ब्रह्मदिन तब कहनीती॥ कल्पकहत विधिके दिन काहीं॥ चौदह इंद्रमरैं जय हिमाहीं॥ दिवस प्रमाण कहीहै जेती। बरण-

त बिबुध निशा पुनितेती ॥ दिनभरिजोविधि सृष्टिबनावै । निशा समय मायामहँ जावै ॥ जाकहँ प्रलय कहत कबिज्ञानी । सो ब्रह्माकी रैनि बखानी ॥ जादिन जन्म बिधातालेई । आज्ञा वेद ताहि दिनदेई ॥ वाही दिनते जगउपजावै । विविधप्रकार सजीव बनावै ॥ पुनि जब अन्त होइ विधिकेरा । तबहीं महाप्रलयकी बेरा ॥ तब न धरा इत्यादिक रहई । यहविधि सत्य सत्य श्रुति कहई ॥ निशा दिवस ब्रह्माको जोई । बहे जात तामें [illegible] दिवस जन्म निशि कालकलेवा । क्यहिविधिपारजाय [illegible] मानस कहौ करैकाभाई । आयुर्दाय नेकसीपाई ॥ दो० ॥ बिधिके उपबृतहीं धरत तनबिराट भगवान । तासु मरतही तजत त्यहि तैंनिज जिय अनुमान ॥ (मनउवाच) उतपति स्थिति नाशजो जगको बर्णनकीन । सोसमुझो भलिभांतिहीं रही न शंकापीन ॥ अबपरंतु समुझाय कहु मानस तनुको भेव । कौन तत्त्व करि सो बनो यह मेटौ अहमेव ॥ (बुद्धिरुवाच) व्योम वायु अरु अग्नि जल पृथ्वीयुत येपांच । इन तत्त्वनकरि तनु बन्यो बरणतबुधजन सांच ॥ पांच तत्त्वये जोकहे पांचतत्त्व गुणऔर । शब्दस्परशरुरूप रस गन्धिकहत कबिमौर ॥ चौ०॥ नासानयन जीभ त्वकजानो ॥ श्रुतिसह इन्द्रिय ज्ञान बखानो ॥ गुदा लिंग कर पद मुखजोई । इंद्रिय पांच कर्मकी सोई ॥ प्राणअपानरुव्यानसमाना । और उदान मनो बुधि साना ॥ पांचतत्त्व सूक्षम तनुपाई । सप्रह थूल प्रकट ये भाई ॥ इनकरि सब देहिनकी शोभा । इनहीं ते नर तनु सुखदोभा ॥ इनकरिपाप सुकृतनरकरई । इनकरक्रिया कर्म अनुसरई ॥ इनतेस्वर्गनरकपथ धावैं । इनकरि हरिपुरशोभा पावै ॥ इनहींते संसार पसारो । पांच तत्त्व ये प्रकट निहारो ॥ (मनउवाच) दो० ॥ पांचतत्त्वकरि जो भये सप्रह सूक्षमनाउ । कौनकहांतेकासोगुणयहमोको समुझाउ ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ बाणीकान व्योमते भाई । एक कहै दूजे सुनिपाई ॥ त्वचा हस्त है प्रकृति समीरा । दोउस्परशहिजानत धीरा ॥ नयनचरणइंद्री

हि जोई । प्रकटीअग्नितत्त्वतेसोई ॥ नयनचहैं ज्यहिरूपहिदेखा ।
पाततहां पहुँचाव विशेखा ॥ लिंगजीभ जलते बुधभावै । दोऊ
रस विलास अभिलाषै ॥ गुदानाक पृथ्वी अनुमानै । गन्धि करै
यक दूजी जानै ॥ प्राण अपान समान बखानो । व्यान उदान
पांच ये जानो ॥ पांचठौर ते गुण पुनिपांचा । एकैपवन अंश यह
सांचा ॥ दो० ॥ धरातोयवाताग्निमिलि व्योमतत्त्वयेपांच । पांचौ
थकरि मनबुधि उपजेसांच ॥ जेती इन्द्री देहकी भोग
करकहुक.।य । स्वादनजानै तासुको मनबुधि जानैसोय ॥ मनहूँते
पुनि चतुर जन बुद्धि महासिरदार । होइ सुमति जादेहमें करै
ताहि भवपार ॥ (मनउवाच) यह सूक्षम इन्द्रीनको है बखान
किय जौन । थूलभई जाभांति सों वर्णनकीजै तौन (बुद्धिरु-
वाच) चौ० ॥ पांचतत्त्व ऊपर जे गाये । तिनहीं ते तन थूल
बनाये ॥ एकएकके करिकरि पांचा । रचेपचीस भणतबुधसांचा ॥
सोयहपंचीकरणकहावै । भगवतगीताभलिकरिगावै ॥ अस्थित्वचा
रोमानसमासा । धरातत्त्वते करतप्रकासा ॥ स्वेदशोणपितलाररुरे-
ता । तत्त्वोदककबिपंचकहेता ॥ क्षुधातृषासुख कांतिकहावै । नींद
और आलसबुध गावै ॥ इनकीउपपति सिखितेभाखी । विदित
करीकुछ गुप्तनराखी ॥ धाइकूदिचलि कुरिकरिबोई । और पसा-
रनि पौनकहोई ॥ दो० ॥ शीश कंठ हिय उदरकटि व्योम तत्त्व
करि होइ । यह समुझौ पंचीकरण कही पचीसौ जोइ ॥ कही
पचीसौ प्रकृति ये थूल जीव तन माहिं । सुनुतिनको पुनि भेद
कछु जो तू जानत नाहिं ॥ चौ० ॥ यद्यपि पांच पांचकरि गाई ।
तदपि कहौं जो ज्यहि अपनाई ॥ अस्थि मुख्य पृथ्वीपल नीरा ।
अग्नि नाटिका त्वचा समीरा । रोम व्योम जल रेत बिचारी ।
पित्त तेज अरु स्वेद वियारी ॥ रुधिर मही अरु लार अकासा ।
क्षुधा तेज पुनि पौन पियासा ॥ सुखमा जल अरु आलसधरनी ।
नींद अकाश अंशतेबरनी ॥ धावनिवायु पसारनिनाका । कूदनि
सिखि गावत कबिबाका ॥ इला सकोचन चलनि जलजानो । थिर

नभ खण्ड वायुपहिंचानो ॥ हियसिखि उदर नींदकटि धरनी। जोज्यहि तत्त्व मिली सोबरनी ॥दो०॥ अस्तिरेत अरु भूख पुनि धावनि शिरये पांच। इलानीर सिखि पवन नभ क्रमते खालिस सांच । याविधि थूल शरीरधरि जीवकरत बहुभोग। दुखसुख नरकरु स्वर्ग पुनि पावतरोग निरोग ॥ इनहींतेकरिसुकृतनरमेटि देततन पाप। पारब्रह्मईश्वर भजत देखत प्रकटप्रताप ॥ सूक्षम थूलशरीरहीं कहे तोहिं समुझाय । अबजोपूँछै सोकहौं श्रीहरि पद शिर नाय ॥ (मनउवाच) प्रथमकहे तुम तीनिगुण सत रज तमयेनाम। परख कहा जाविधिलहैं नरतनमें विश्राम (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ सकलबस्तुकरहोविज्ञाना। अतिसुशीलबहुभांति सुजाना ॥ निर्मल बुद्धि भजै भगवाना। मोहादिक जातननसमाना ॥ मायाजाहि नसकै भ्रमाई। स्वई सतोगुण जानिय भाई ॥ ज्ञानहोइ निर्मलतन जासू। सबविधि बिद्या विनयप्रकासू ॥लोभसहित पुनिसब व्योहारा। सोरजगुण बुधकरतबिचारा ॥ आपुहिभूलि ईशबिसरायो। कामादिक मदतें बौरायो ॥ अदयाचित्त महा कटुबानी। ज्ञानविवेक बातनहिंजानी ॥ मायामोहलोभकै बाधा। रामभजनलगि कांधनकांधा ॥ अपरौदोष अधिक तनदेखौ। ताहितमोगुण चितमहँ लेखौ॥ जो सतगुणको मारगगहई। अन्तसमय हरिपुरसोलहई॥रजगुणहूंकी यहगतिभाई। दृढ़मति रहै तौस्वर्गहिजाई॥तमतेकेवल नरकबसेरा। अमित वर्षलहुनहिं निरबेरा॥दो०॥निजआतम चीन्ह्योनहीं रहोमोह आधीन। महा कृतघ्नी जानियम डारिनिरे मनदीन (मनउवाच) मोहिंभईशंका सुनत जीवनरकमें बास। प्रथमभन्यौ तुमब्रह्मलव अबकसनरक निवास(बुद्धिरुवाच) चौ०॥आदिअन्त अबकहौं कहानी। करणी तुमलीजो पहिंचानी ॥ मिलि त्रियपुरुष अंशदुहुकेरा। उपजत सुतसुखदाय घनेरा ॥ त्रियशरीर महँ मलजो रहई। अतिअपवित्र वेद बुधकहई ॥ पूरुषतन करकाम अघोरा। बिधि सँयोग तियनर करजोरा ॥ मिलि नरमल तियमल जमिगयऊ। हरि

इच्छा निर्मिततन भयऊ॥ उदरहृदय भुजकंठ बनायो। मुख नासिका नयन भुजभायो॥ शीश सुडौलरच्यो जगनाथा। गुदा लिंग इत्यादिक साथा॥ कीन्ह सजीव प्रभा निजडारी। नाटक विद्याकरि असुरारी॥दो०॥ बांधिअधोमुख दयोत्यहि नहिंपायो अवकास। निजसेवा यहखेलहित करिहरि चित्तहुलास॥ चौ०॥ अधमुख बँधे बिकलभो जीवा। सबशरीर लिपटो मलपीवा। अतिदुर्गंधि अन्नपच केरी। विह्वल प्राणन सकति निवेरी॥ भक्ष मातुकटु जादिन काहू। उठीउदर ज्वाला तनदाहू॥ जठरानल अतिकठिन बखानी। जावश विकलहोत सबप्रानी॥ परवश परो न मारगकोई। निजमन कृत बिचारभो सोई॥ विदित बात यहसबजग अहई। दंडपरे नरहरि हरि कहई॥ नहिंरक्षक कउ गर्भबसेरे। सूझेपाप जन्म बहुकेरे॥ कहै प्रथम जो पातक कीन्हा। ताकारण श्रीहरि दुखदीन्हा॥ दो०॥ अबनारायण कृपा करियहिदुखते निरवारु। त्यागि सर्व भवकामना करिके ज्ञान विचारु॥ करिहौंसब जपयोग अरुभक्ति कृपानिधि तोरि। सत्य सत्य यहसत्य प्रभु करुरक्षा अबमोरि॥ सुनिनिवन्ध दायानिधे प्रभुमानी परमान। तारक्षाहित आपुहीआये श्रीभगवान॥चौ०॥ शीत उष्ण माता जोखावै। प्रभु निजकरसों ताहि बरावै॥ जो कछुकष्ट जीवकहँ होई। नाशैसकल कृपानिधि सोई॥ रूपचतु-र्भुज धरे खरारी। सन्मुख तासुरहैं सुखकारी॥ जस जननी पालै निजबाला। तसजीवहि रक्षक गोपाला॥ देखाचहै भजन यहु करिहै। भक्तिहेतु जगसुख परिहरिहै॥ जबते ईश भयो रखवारा। तबते तन न कलेश प्रचारा॥ गर्भदिवस यहिबिधि चलिगयऊ। जन्मलेनकर अवसर भयऊ॥ व्यथित शरीरगई सुधिभूली। पचयमानतनभेजिमिशूली॥ दो०॥ मुर्छितभो क्षण-मात्रतब जन्मलेतकी बार। चेतसमय चहुंदिशिनहीं देखा निज रखवार॥ अतिअधीरह्वै जीवतब कीन्हो कठिन बिलाप। कहां कहां यहशब्दज्यों करैलाग निजजाप॥चौ०॥ धाइधाइ असनान

कराई। कीन्हो स्वच्छ शरीरहिजाई॥ जबलगि नहिं कीन्होपय पाना। तबलगि नहिंभूलो भगवाना॥ क्षीरपान कीन्ह्यो ज्यहि बेरा। मोहराज तनकीन्ह बसेरा॥ बिसरि निवन्धरही सुधि नाहीं। माया जबहिंगही हितबाहीं॥ तेल फुलेल शरीर लगावैं। जननी हलरावैं दुलरावैं॥ उबटितनहिं चौतनि शिरडारहिं। सुभग पलँगपर लै पौढ़ारहिं॥ आपु काजगृह लागैंसोई। सोहत बालशुद्धि तनखोई॥ स्वेदज जीवकीट इत्यादी। काटहिंतन दुखदाय बिषादी॥ दो०॥ जब शरीर कीटनगह्यो रोयो बाल अधीर। बैनकहै समरथनहीं जोभाषै निजपीर॥चौ०॥ करै बिलाप सुनैनहिं कोई। दुखद कीटलागे तनसोई॥ कतहुंमातु सुनिपाव जीवानी। लियेउठायहरो दुखआनी॥ क्षुधावंत आकुल तनभयऊ। मातु सदनकारज चितदयऊ॥ सूझत इतउत नयन पसारा। ह्वैअधीर तबरोयपुकारा॥ सुनि सुतरुदनमातुचलिआई। सुखी कीन्हपयपान कराई॥ कुछ दिनबादि चले निजपायन। मातुपिताकहँ अतिसुख दायन॥ जहँतहँ खेलनमहँ चितदयऊ। तृषाक्षुधा भूलतह्वै भयऊ॥ नहिँभावत गृहखेल बिसारी। फिरैसंग बालक ह्वैचारी॥दो०॥ मातुपिता दिनशोधिकै गुरुपहँ दीन्हपठाय। पढ़ैलाग विद्यातहां नैकनैक चितलाय॥चौ०॥ जो उत्तमकुल भो अवतारा। तौ विद्यागुण कीन्ह बिचारा॥ जोपै नीचगृह जन्मत भयऊ। तौ यहदशा खेलमहँ गयऊ॥ यहिबिधि बालापन गा बीती। नाकीन्ह्यसि जो प्रथम कहीती॥ नर उपकार करत जोकोई। मानतसकल जन्मभरिसोई॥ महाकष्टते ईशबचायो। ताकहँ कतहुँन शीशनवायो॥ तरुण अवस्था तनमहँआई। मैन व्यथाते तनतपछाई॥ ज्ञातबन्धु मिलिकीन्ह विवाहा। मनप्रसन्न तनबड़ उत्साहा॥ बहु आभरण सजेतनमाहीं। लखि निज रूपन अंगसमाहीं॥ दो०॥ मनफूले मारग चलत देखत अपनी छांहिं। कहत महासुंदरबने कोऊहमसम नाहिं॥चौ०॥ जो कुछ ज्ञान चित्तमहँआयो। तौ कारजमहँ जिय बहिलायो॥ जोमूरुख

विद्यादिक हीना। कामविवश तौ फिरै मलीना॥ ताके परतिय लाजबिसारे। धर्मकथाते चलहिं नियारे॥ कहैजो कोउ यहकाज ननीका। तौ सुनिबैन करैं मुख फीका॥ जो कदाचि सम्पति विधि दयऊ। तौ फिरिअधिक गर्वउर छयऊ॥ गालफुलाय चलैं मगमाहीं। जनुतिहुँ पुरीभूपये जाहीं॥ मित्रनहूं सन मीठी बानी। संपति मदन कहैअज्ञानी॥ काहुइकहै न मधुरीबाता। अहंकारबश उरन समाता॥ दो०॥ साधुसंतकहँ देखिकर करैंहँसी तेमूढ़। बादिमुड़ायो मूड़तुमलहोनअर्थअगूढ़॥ चौ०॥ ज्यहिविधि जन्मदीन नरकेरा। त्यहिजग भोगरच्यो बहुतेरा॥ तजिपाखण्ड करौ जगभोगा। बे कारणयह सहौबियोगा॥ सुनतहि वचनसाधु मुसुकाहीं। जिनके क्रोधलोभ कछुनाहीं॥ जोविधि जन्मरंकगृह दयऊ। तौचिन्ताबहुविधि तनछयऊ॥ प्रमदातनय सुताहितलागी। फिरैंजहां तहँ रंकअभागी॥ करैंकृषी अथवा व्योपारा। पर सेवाकरि दिवस निवारा॥ अथवा भिक्षाटन नितकरहीं। जग छलिधूति उदरनिज भरहीं॥ प्रिय सुत फाँसि मोह गलडारी। भजैन हरिपद भयोदुखारी॥ दो०॥ गई भूलिसबचतुरई चिन्ता ग्रसितशरीर। मिलैनधन उरशांतिनहिं जहँतहँ फिरैंअधीर॥ पेट खलाये जगफिरैं प्रियातनय के हेत। हरिमाया अतिप्रबलज्यहि कर्‍यो सचेत अचेत॥ प्रभुसों कियो निबंध जो भूलिगयो जड़ सोय। कहौजगतमहँ आइफिरि कसन दंडबुधहोय॥ चौ०॥ भटकतही बीती तरुणाई। जरादेह मधि तब नियराई॥ तृष्णाबढ़ी अमलतन भयऊ। तबहुँनईश चरण मनदयऊ॥ अल्प दृष्टि पद द्वौथर हरहीं। बैठिउठहिं तब अतिबलकरहीं॥ इन्द्रीसकल भई बलहीना। कामादिक तनते भो क्षीना॥ पौरुषबिन उद्यमनहिं होई। प्रियबालक पूंछत नहिं कोई॥ क्रोधबढ़ो नहिं बरणि सिराहीं। कहैनीति त्यहिअति अलसाहीं॥ बैठरहैं जड़रूप दुवारे। जातनिकट कोउनाहिं पुकारे॥ गयोबुढ़ाय शिथिल तन भयऊ। ईश्वरचरण चित्तनहिं दयऊ॥ दो०॥ पट विकार जे देहमें बीती

तिनमहँपांच। छठी आइ नियराइ रहि तबहुँन हरिपद यांच॥ (मनउवाच) षट विकार कासों कहत कहौ मोहिं समुझाय। जिन्हैंजानिकै मानिभय हौंसुमिरौं सुरराय (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ जन्म होत यह प्रथम विकारा। दूसर तनकर बढ़त विचारा॥ तीसर बालअवस्था भाई। चौथीभणत विवुध तरुणाई॥ पंचम जरा अवस्था सोई। षष्ठम अन्तकाल जोहोई॥ षट विकार ये कहीबखानी। तेतुम सत्यलेहु मनमानी॥ इनमहँ पंचम बीतै लागी। भयो न जीव ईश अनुरागी॥ बीती जरा अन्त नियराना। जसगति भई सो करौं बखाना॥ बाढ्यो कफ लाग्यो गलसोई। अन्न पानि कहँ रुचि नहिं होई॥ ऊरधश्वासचली तन माहीं। चन्द्रसूर सन्मुख कउनाहीं॥ जहँ तहँ कफ उगिलहिं उबकाहीं। पड़ेरहैं जल अन्न न खाहीं॥ प्रमदा पुत्र सकल अन-खाहीं। कहैं ईश अबये मरिजाहीं॥ यह घिनौनपन अब न सुहाई। हारिगये करिवैद्य उपाई॥ कठिनकराल दशायह भाई। धर्मन करो जो होइ सहाई॥ जस माखी मधु जोरि न खाई। छीनेकोल मनहिं पछिताई॥ तिमिसंपदा जोरि गृहमाहीं। दई वराटिक हरिहित नाहीं॥ प्रथमजीव ऐसो अघखानी। तासु पाप किमि कहौं बखानी॥ जन्म समस्त वृथा जड़ खोयो। संपतिहित सुखनींद न सोयो॥ दो०॥ जोदश दोपनसों भरी देह जीव ज्यहिवासु। समनचार करिकोप त्यहि चहैछुड़ावनआसु॥ मुदगर फाँसी हाथलै आये यमके चार। तिनके देखतही विवुध रहीन नेकसम्हार॥ चौ० ॥ हैभयभीत तुरत मलमोचा। ताहूसमय न हरिहित शोचा॥ हनि मुदगरन डाल गल फाँसी। काढ्योजीव दशौदिशि गाँसी॥ त्रियातनय सेवक परिवारा। खड़े सकलकृत शोच विचारा॥ नेकन बश काहूको चाला। यमदूतन कीन्हो बेहाला॥ मारिकूटि यमत्यहि लैगयऊ। संगी तासु कोउनहिं भयऊ॥ जिनहित सिगरो जन्मगँवाया। प्रियसुतकोउ कामनहिं आया॥ यमपुर भयो न्याय जबजाई। रक्षक धर्म न

ठहरो भाई ॥ नहिं हरिभजन न परउपकारा। तीरथ ब्रत नहिं नेक अचारा ॥ दो० ॥ सतसंगति इत्यादि जे उत्तम जगमें काज। तेनेकहु पायेनहीं तबशोचे यमराज ॥ चौ० ॥ महा अधम यह जीव चँडारा। हरिहित नेकन कीन्ह बिचारा ॥ कहा दण्ड दीजै यहशोचै। तात्रवलमुझि नैनजल मोचै ॥ फिरिहरि मायहि शीश नवायो। भीमरूप निजदूत बुलायो ॥ कहो डारु यहि कुम्भी-पाका। हनै चोंच शिर खुलतै काका ॥ धरि भुजदूत डार तहँ जाई। जामधिपरे जीवअकुलाई ॥ असकरणी कीन्हीजगमाहीं। कहौजीव कसनरक न जाहीं ॥ यहिविधिजीव नरकमहँ बासा। रक्षक तासु न कउ दशआसा ॥ ब्रह्मक्रांति यहजीव बखानो। निजकरणीते नरकहि सानो ॥ दो० ॥ बरणि समस्तकही सुहौं जीवनरक ज्योंबास। अब जोपूंछै सोकहौं छूटै भवभय त्रास ॥ (मनउवाच) कहे दोपदश प्रथमंतुम सो म्वहिंकहौ बुझाइ। संशय तनको जाइमिटि ज्ञान अधिक सरसाइ ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ सुनुदश दोष सहित विस्तारा। योगीजन जो करत वि-चारा ॥ प्रथम शौचभाषत बुधिवाना। द्वितियेतनहि अशुधता साना ॥ तृतियेतन दुर्गन्धि कहावै। चौथे बहुत खण्ड बुधगावै ॥ पंचम रोगग्रसै तनयेहा। पष्ठमजरै काष्ठवत देहा ॥ सप्तम मरै देह सबजानै। अष्टम शिथिलहोय पहिंचानै ॥ नवम बहुरिहोवै यहजानो। दशम स्थूलरूप अनुमानो ॥ अब जो अपर चहैसो गाऊं। निर्मलमति विज्ञान सुनाऊं ॥ येदशदोष बसैं तनमाहीं। अन्तसमय समस्त मिटिजाहीं ॥ (मनउवाच) दो० ॥ क्यहि विधिछूटै नरकते कहुतू मोहिं बुझाइ। कासाधे यहिदेहमें जासों हरिपुरजाइ ॥ (बुद्धिरुवाच) जो षटउर्मी जीतई मिटै सकल तनताप। होवै जीवनमुक्तनर देखै आपाआप ॥ (मनउवाच) सो० ॥ षट उर्मीका आहि यहमोको समुझाइ कहु। फिरिहौं जीतौं ताहि मेटौंतनकी तापसब ॥ (बुद्धिरुवाच) ॥ चौ० ॥ प्रथमकाम अतिबिवुध कराला। जाबश सबजगजीव विहाला ॥

द्वितिये क्रोध पापकरखानी । बिकलहोत जाबस सबप्रानी ॥ तृतिये लोभ महादुखरासी । सकल जगत गलडाल रवफांसी ॥ मोह चतुर्थ वृजन ग्रहजानो । नरकजीव तावश अनुमानो ॥ पंचम भानबसै तनमाहीं । हरिचरित्र ज्यहि कुछ न सुहाहीं ॥ षष्ठमतन अपमान कहोई । ज्यहिते जीवहि अति दुखहोई ॥ ये षटउर्मीसंतबखानैं । समुझहि चतुर जेज्ञानहिंजानैं ॥ जीवन-मुक्तहोइ इनजीते । नरकजाइ इनके हितहीते॥ (मनउवाच) दोहा ॥ मोहादिक जे तुमकहे ब्यापत सबकीदेह । का उतपति किमि जीतिये कहिये सहित सनेह ॥ (बुद्धिरुवाच) ॥ चौ० ॥ सुनुउतपति इनकीचितलाई । सबप्रसंग तुहिंकहौं बुझाई ॥ देश शरीर बसैमन भूपा । तासुत्रिया द्वैमहा स्वरूपा ॥ एकप्रवृत्ति दु-र्भगा नारी । द्वितिय निवृत्ति महासुखकारी ॥ मोहलोभ अरुक्रोध कराला । काम कुभोग दुष्टसबकाला ॥ अहंकार मिथ्या द्विजदो-षा । हिंसा दम्भआदिसहरोषा ॥ पुनि अविवेककहो पाखण्डा । तृष्णा दुःशीलता प्रचंडा ॥ मान अलज्जा आदिकजोई । भयेप्र-वृत्ति जातसब सोई ॥ ज्ञान विवेकाचार विचारा । दान धर्म वै-राग्य सम्हारा ॥ दो० ॥ शांति दया अरु शीलता समसंतोष अ-लोभ । लज्जा क्षमासु चातुरी मनजानिये अक्षोभ ॥सो०॥प्रणय न्याय अरु योगसुख इत्यादिक बसैंतन । निवृति जातये लोग समुझतज्ञानी योगिजन ॥ (मनउवाच) दो० ॥ द्वै माता यक पितातै भयेप्रकटयेसर्व । वैरभयो कारणकहा मेटौ संशयखर्व ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ विदितबात यहसबजग अहई । वैर बिमातनमें कुछरहई ॥ और अधिक याते यहकारण । चहैविवेक जीवकह तारण ॥ मोहचहै निजपितु सुखदीन्हा । ताते वैरभाव उनलीन्हा ॥ जो विवेककी पकरै शरणा । सोदेखै श्रीहरिके च-रणा ॥ चलैमोह मारगजोभाई । धर्मरहित नरकहि चलिजाई ॥ जे पंडितजन जगतसयाने । ते विवेककेमारगसाने ॥ अंतसमय पावैं सोई पद । जो ऋषिराज वेद आगम बद ॥ चलै मोहबश

मूरखजोई। अवथिहोहि नरकागमिलोई ॥ दो० ॥ थिरचितकरि तजि दुर्मतिहि सुनु विवेक की जीति। ज्यहि विधि हास्यो मोह दल भाग्योद्वै भयभीति ॥ चौ० ॥ पूरब कहो बैरकर हेता। अरु उत्पत्ति सुप्रेम समेता ॥ अब सुनु कथा रसाल सोहावनि। बिज्ञानिन कहँ अति मनभावनि ॥ गहो जीव जब पंथ विवेका। हरिहि मिलन हित टेकयसि टेका ॥ त्यागयसि सकलविषयपरिवारा। ज्ञान धर्मकर कीन्ह पसारा ॥ तबहीं शोच मोह मन ठंयऊ। काम क्रोधकह बोलत भयऊ ॥ अरु पाखंड शोक संतापा। लोभादिकजिन अधिक प्रतापा ॥ सबसनमिलि यहसम्मत कीना। हतौ विवेक दंडदै पीना ॥ तासु सकलदल बांधिसुलेहू। अथवा देश निकारा देहू ॥ दो० ॥ नाइ चरण शिरमोहसों बोला सुभट पखंड। जीवकरौंहौं आपुवश जीतिंविवेक प्रचंड ॥ सो० ॥ आपु धरौ उरधीर कितीबात यह कृपानिधि। लै असत्यरणधीर जीतिसमर बांधौंरिपुन ॥ चौ० ॥ असकहि चलो सुभटपाखंडा। निज स्वरूप तब रचो अखंडा ॥ झूँठा शिष्य संग त्यहि डोलै। जो प्रतिक्षण असत्य बच बोलै ॥ रचे विभूति सर्व तन माहीं। सुन्दर जटा सुशीश स्वहाहीं ॥ माला गले परीं द्वै चारी। कान शीश बहु माल सम्हारी ॥ मध्य दंड माला भुज छोरा। छाती कांध माल द्वै जोरा ॥ टोपा लाल शीशपर सोहै। सुभग कमंडल कर मधि जोहै ॥ आवत देखि जीव सतभावा। मध्यबाट मृगचर्म डसावा ॥ निज माया पाखंड पसारी। झूंठशिष्यसो बैठ अगारी ॥ जिमि बक रंगे चोंचपद नैना। बनै हंस कछुकहै न बैना ॥ निर्णय जल पय जब परिजाई। तब सिगरे जग होइ हँसाई ॥ तसपाखंड कीन यह माया। लखि स्वरूप जीवहिभल भाया ॥ कीन्ह दंडवत पद शिरनाई। चहै कि चलि आसनढिग जाई ॥ दो० ॥ कहो तबहिं ता शिष्यने सुनुरे मूढ़ गवाँर। पाछू गुरु ढिग जायसी प्रथमहिं चरणपखार ॥ नेकहु कीन्ह बिचार नहिं सिराचार तू आहि। पदवी शिष्टाचारकी सोतू जानत नाहिं ॥

चौ० ॥ ब्रह्म सभा शुभ देव समाजा। शोभित जहां दशौ दिगराजा ॥ एक समय तेहि सभा गये गुर । देखतहीउठठाढ़भयेसुर। बूझ्या बहु बिचार उरलावा। इनहिं योगनहिं आसनपावा ॥ तब पद बंदि दीन कमलासन । द्वौकरजोरि मांगि अनुशासन॥ सो सुर पूज्यगुरू ममराजै। पुण्यस्वरूप महाछबि छाजै ॥ तिन ढिग चलपद बिना पखारे। तैंमूरख अज्ञान महारे ॥ यह सुनि जीव सत्यकरि जाना। तासुबचनकी कीन्ह प्रमाना ॥ शोचकरै शिक्षा यहिलेऊं। अपरबात सिगरीतजि देऊं॥ दो०॥जबजान्यो जीवहि भ्रमत तबपाल्यो सद्भाव। हारिविवेक बिचारिउर समुझि आपनो दाव ॥ चौ० ॥ सुनुरेजीव भूलमति भाई। जनियाकी बातनपर जाई ॥ शिष्य झूंठ अरु गुरु पाखण्डी। लोकलाज सिगरी यहि छण्डी ॥ जगतसकल छलिबेके काजा। कीन्हसम्हार देह करसाजा ॥ जोलखिभूलि जाहिजग लोगा। सहैंमहा दुखदाय बियोगा ॥ यहसुनि दम्भ आपुइमिकहई। बड़सद्भाव छलीतूअहई ॥ प्रकट कहानी यह जगमाहीं। आपनसम कोउ दूसरनाहीं॥सुनु तोकहँ भलिबात बताऊं। पुनिअपने मारगमहँ लाऊं ॥ प्रथमहिं तनकहँनीक सम्हारै। ता पाछे पुनि वेद पसारै॥ दो० ॥ अशुभ रूपजग जेयरे यद्यपिमहा प्रबीन। आदरतदपि न करतकउ करत सभाते भीन ॥ चौ० ॥ यातेभल शरीरका साजै। बिबिध भांति आनँदसो राजै ॥ दानदेइ जग लहै बड़ाई। परधन हरै हेत गुरुताई ॥ बिनस्नान न जल मुखमेलै। करि पूजन पापन कहँ ठेलै ॥ यज्ञकरै जपभांति अनेका। नेमसहित छूटैनहिं टेका ॥ तू कुबेरअरु धर्मन जानै। कहुकहनी तोरीकोमानै ॥ धनाचार तव संग नशाई। बिनअहार बसनन बिनुभाई ॥ काहि सहाइ ऐस दुखसाथा। सुनतै बचन पीटिये माथा॥ तब सद्भाव नीति मय बांनी। कही बिवेक बिरागइ सानी ॥ दो०॥ सुनु कहनी मम ध्यानधरि कहोंतोहिं समुझाय। भूषणबसन अनेकबिधि त्रियतन अधिक सोहाय ॥ चौ० ॥ तनशोभा अरुअधिक शृँगारा । कैशो-

भत नृपकै धनवारा ॥ दीन चहैनृप समतन साजा। निज दिशि देखिलहै बड़िलाजा ॥ कहांवसन भूषणवेषावै। जोशरीर नृपसम सजिलावै ॥ नृपसोवत भलिसेज बनाई। दीनधरा पर प्यार इ-साई॥ भूपति सुखित जन्म सबकाटै। दुखिया तन चिन्तानित चाटै॥ रहैसदा स्वाधीन नरेशा। पराधीन परजासु कलेशा॥ बतैं मध्यभाग हरिदासा। नहिंभूपति नहिंदीन दुरासा ॥ जसमहिपरै सेज तससोवै। दुखसुख दुहूं बातकी खोवै ॥ दो० ॥ कबहूं भो-जनभूपसम कबहुंक फल आहार। दुहूंबातते रहित कहुं ब्रतहरि हितअनुसार ॥ चौ० ॥ कहुं शुभ बस्त्र नग्नकहुं रहई। बल्कल कतहुं पहिरि मुद लहई ॥ दुखकहुं सुख पावै जगमाहीं। मान अमान बिचारत नाहीं ॥ जबयह दशाजीव कहँ आवै। तब हरि मारगभललखिपावै ॥ जन्ममनुष्य भयोयहिहेता। भजैईश करि-कै चितचेता ॥ नहिंयहि हेतजो चहै बड़ाई। भूषण बसननस्वांग बनाई ॥ निजशरीर कर करतं सम्हारा। ईशभजन सबभांति बि-सारा ॥ करिपाखण्ड जगत छलिपावै। सो प्रभुनहिँ ठगनी महँ आवै ॥ देखै तिहूंलोक बिन अंजन। यहिकारण हरिनाम निरंज-न ॥ ईश्वरनहिंरीझत लखिरूपा। मोहत लखिनिज दासकुरूपा॥ रूपवंत धनवंतनरेशा। होत न संत समान विदेशा ॥ जोपाखंड पंथतव गहई। निश्चय अंतनरक सोलहई ॥ पुनिकरिकोप कहै यहदम्भा। बलिहरि हितकिय यज्ञअरंभा ॥ दो० ॥ दान दियो बहुयज्ञकरि बलिहरिचन्द नरेश। दशाभईसो विदित जग सुनि पाइयतकलेश ॥ चौ० ॥ व्याध अधम सहजै गतिपाई। गृद्ध सेवरी हरिपुर धाई ॥ गणिका अजामील अवखानी। जिनन बिबेक बात कउजानी ॥ कुंजर पशु इत्यादि अनेका। लही सुगति तजि पंथ बिबेका ॥ वेदशास्त्र सबकरैं विवादा। समुझत जीवहि होत बिषादा ॥ कोऊ ईश शंभु कहँ टेरै। कोऊ जगत मात दिशि हेरै ॥ बिधिकोऊहरि गणपति भाखै। कोऊटेक सूरपै राखै ॥ बसत जीवदेहीमहँ जोई। कस बेदान्त ईश है सोई ॥

झगरा यह न होय निरुवारा । तातें कुछ नहिं पंथ तुम्हारा ॥ दो० ॥ कहु पुनि गहि केहि पंथकी लेवै ईशरिझाइ । तब सद्भाव अनंदयुत कही ताहि समुझाइ ॥ चौ० ॥ तजि इच्छा अरु मान गुमाना । गहै बुद्धिकर ज्ञान कृपाना ॥ काटि मोह फांसी निज हाथा । ज्ञानी पुरुषनकी करि साथा ॥ भजै ईश दुखसुख द्वौ त्यागी । दया धर्म सौंहू अनुरागी ॥ योग भाव आतम निज हेरै । श्रद्धा सहित ईशकहँ टेरै ॥ यहि विधि सो तजि सब पाखंडा । अन्त मुक्ति सोलहै अखंडा ॥ सुनिपाखंड बयनसद्भावा । लज्जायुत अघ शीश नवावा ॥ बहुविधि मन बिचारकर सोई । सूझिपरा नहिं उत्तर कोई ॥ अतिदुख सह मृगचर्म उठावा । अमित भांतिकृत मन पछितावा ॥ दो० ॥ हारिपरा खलचला गृह मिल्यो मोहको जाय । समाचार सद्भावकर सर्व कहा समुझाय ॥ मोहराज अति दुखित ह्वै कामहिं कहा बुझाय । जाहु तात पौरुष करो जीव लेहु अपनाय ॥ जीवसंग सद्भावइत कह विवेक सों गाथ । हारि जानि पाखंड की हर्षितभो सब साथ ॥ सुनो वृतांत विवेकजू काम कीन्ह दल साज । तब बिचारको प्रबल लखि पठवा जानि अकाज ॥ चौ० ॥ चला कामकरि आपु बनावा । सुमनबान निज धनुष चढ़ावा ॥ सँग ऋतुराज उर्बशी नारी । राग रागिनी ताल सम्हारी ॥ कोकिल पिक अरु तिहुँ गति बाता । मदन दाह उपजै लखि गाता ॥ देखि जीव भल ठाट बनावा । त्यहि अवसर विचार तहँ आवा ॥ लखि बिचारि बोल्यो तब कामा । सुनरे जीव बचन सुखधामा ॥ सुना तु भो सद्भाव संगाती । तजि सुख संग बैठदुखपाती ॥ विधि तनदीन्ह भोग हित लागी । तू मतिमंद दीन्ह त्यहि त्यागी ॥ तातेअवशि त्यागि सद्भावा । त्यहिं शिषदेन हेतुहीं आवा ॥ दो० ॥ ब्रह्मा विष्णु हरादि सुर सर्व करत प्रियभोग । जाते अधिकन औरकछु सुखभाषत बुध लोग ॥ चौ० ॥ ॥ तब बिचार कह सुनु रतिनायक । अति निलज्ज तव संग कुभायक ॥ जो बहनीक भोगतुम

अहऊ। जासु गर्व अति भूलत अहऊ ॥ तासु वृतांत सुनौ चित लाई। पाछू जीवहि देहु भूमाई ॥ त्रियभग अवितरक्तसोंरहई। अरु मल मूत्रभरी बुध कहई ॥ जासु दशासुनि मनघिन आवै ॥ परसतही नर नरक सिधावै ॥ ऋतु वसंत अरु तीनि बतासा। सुमन बाण लखि मोहिंनत्रासा ॥ परतिय रमण करतजेप्रानी। दुहू लोक कृत निज करहानी ॥ इत नृप सुनै तुरत धरि मारै। उत यमदूत नरक गहिडारै ॥ दो० ॥ हँसीहोयदुहुं लोकमें कहा भोग या माहिं। करै कही तुव जोबसो हमनहोहिंज्यहिपाहिं ॥ यह सुनि खल निज हारि लखि गयो गेह अकुलाय। मोहराज सों हारि निज कही महा दुखपाय ॥ चौ० ॥ बोला नृपतिक्रोध अपुपासा। कहो मेटु अब मम परिहासा ॥ जीति चमू बांधिये विवेका। करिय जीव निज बशरहै टेका ॥ छूटै पिताकरै बहुभोगा। नतबियोग यहिमरिहैं लोगा ॥ चल्योक्रोध आज्ञालामानी। अरुया हिंसादिक मन आनी ॥ समाचार यह पाव विवेका। बोलि क्षमा कहँ जोकर नेका ॥ क्षमा अहिंसा आदिक धाई। जहां जीव तहँ तुरतहि आई ॥ क्रोध क्षमांलखि नवअसकहई। मोदेखत तुवधर्म नरहई ॥ अर्जुनअसज्ञानी जगख्याता। निज कर आपन कुलहि निपाता ॥ दो०॥ परशुराम माताहनी ब्राह्मण मारी राम। शंकर सुत माथा हरो कीन्ह्यो बड़ो अकाम ॥ सो० ॥ यह पौरुष है मोर मोबिन जग जीवै न कउ। मारग चलै न तोर मो सन्मुख कोटिहु किये ॥ चौ० ॥ तपसी मुनिहौं घने बिडारे। आन जीव जग कहा बिचारे ॥ क्षणमहं क्षमा दयाधरि मारौं। बांधि विवेक बंदि गृहडारौं ॥ पलहित पशु पक्षीपरहेता। द्रव्य लागि मानस हनि लेता ॥ पौरुष कौन जीव अपनायो। मोर नाम कहँ सुनि उनपायो ॥ तबहिं क्षमा क्रोधहि समुझायो। सत्य वचन तुमओहिं सुनायो ॥ जहँ हम जाहिं तहां तुम नाहीं। बिदित अन्य सिगरे जगमाहीं ॥ हरिश्चन्द्र क्रोधहिनहिं लाया। चांडाल गृहआपु बेचाया ॥ मोर-

ध्वज निज शोभचिरावा। धर्मराखि तन क्रोधदुरावा॥ जब कउ आय मुष्टिकामारै। तासन लकुटी हनन प्रचारै॥ जो दुरिआय देयकरि क्रोधा। जायपास बिनती करिबोधा॥ सबसन मधुरी भाषैबाता। शत्रुमित्र करलखैन नाता॥ परदुख देखि दुःख मन लावै। सेवाकरि ता दुखहि दुरावै॥ दो०॥ तपसीमुनि चण्डाल नर पशुपक्षी अरुकीट। येसमस्तहैं ब्रह्मलव हनैयोगसुनु ढीट॥ नैनलालउर कोपबड़ हारिचला गृहसूत। ज्योंपौरुष लघुकहैबड़ि लज्जालहैं कपूत॥ चौ०॥ जाइक्रोध निजहाल सुनावा। मोह राजमनभा पछितावा॥ ताहीसमय लोभ हँकरावा। काम क्रोध वृत्तांत बतावा॥ सुनतलोभ तनभा अति कोपा। क्षण महँ करौं बिवेकहि लोपा॥ धाइचल्यो जीवहि अपनावैं। अरु बिवेक दल समर हरावै॥ जब बिवेकने यहसुधिपाई। सपदि दीन्ह सन्तोष पठाई॥ लखि सन्तोष लाभयह भाखै। मो सन्मुख तोकहँ को राखै॥ ब्रह्मचर्य बैरागीस्नेही। लोभलालसा लागि न केही॥ जब बराटिकाकी भैचाहा। ईश्वरकीन्ह सोपैसालाहा॥ तबमुद्रायाचैभ-वप्रानी। मुद्रास्वर्ण पांवसुख खानी॥ नहिंसन्तोष सम्पदा चाहा। मिलै अधिक धनसो उरदाहा॥ यद्यपि क्षयपतिपद मिलिजाई। तदपिन उर सन्तोष दृढ़ाई॥ दुखियायह बिचार नितकरई। परो मिलै कीपरधन हरई॥ दो०॥ पशुपक्षी इत्यादिजे मोहितत्यागत प्रान। मोबिन सुखपावत नहीं तोहिं तजतकहि स्यान॥ ताते जाहुपराय गृह हानि आपनी जानि। जीवलियो अपनाइ हम त्यागीतेरी कानि॥ चौ०॥ तब सन्तोष कहैसुनु भाई। ऐसियहै तुम्हरी प्रभुताई॥ बलिराजा पहँ गयउन भूले। रह्योसिराय भये अनमूले॥ हरिश्चन्द्र करदुख नहिंलागा। लोभनारि सुततन जिन त्यागा॥ परशुसम कहँ नहिंअपनावा। यक बिंशतिधा धरा बहा-वा॥ स्वर्ण अतौल लङ्क रघुनाथा। दीन दान जग गावत गाथा॥ करणहिं कल नहिं आनि सिखावा। प्रात नित्य अर्जुनहिं लुटा-वा॥ मूरख अबिवेकी अज्ञानी। तुव पथ चरण देतते प्रानी॥

संपति दुख सुख लिखा लिलारा। विधि अक्षरको मेटनहारा॥ दो०॥ देवत ईश्वर लहतसो करत ईश्वसो होत। यांचतवाप्रभु सोसवा सकल हमारो गोत॥ विपतिपरे सब धन नशै दुख उपजै भरपूरि। लोभ न लावै भजै प्रभु राम सजीवन मूरि॥ यह सुनि लोभ परायचल बिजय लही संतोष। गहो जीव मारग सुभग जाते पावै मोष॥ चौ०॥ लोभ अजय सुनि मोह रिसाना। पठवा अहंकार बलवाना॥ इतहुं बिनय आपनदलसाजा। बिजय विवेक होत मन भाजा॥ को बहु बकै हार अहँकारा। त्राहि त्राहि ढिग मोह पुकारा॥ अकथ दुःख पायो तब मोहा। निजदल सकल अबलकरि जोहा॥ तबआपुहि उठिचला नृपाला। तासु चलत तन भूतल हाला॥ सुन्यो विवेक मोह चलि आवा। प्रथमहिं धीरजआपु पठावा॥ तापश्चात् सोचकृतआपू। मोहराज कर अधिक प्रतापू॥ अस न होइ कहुं धीरज हारै। करि प्रपंच भूपति त्यहि टारै॥ दो०॥ उचित मोहिं पाछे चलौं हनों सकल आराति। उत धीरज कहँ देखकर मोहराजमुसकाति॥ सो०॥ सुन धीरज ममबैन कहौजाय निजनाथसों। उचित बात यह है न बांध्यो पिता अनीति करि॥ चौ०॥ अस भणि मोह कोह उरलायो। करिबल अमित जीव अपनायो॥ अरु धीरज प्रतिकहँ असि बानी। जाहु तात नतपैहो हानी॥ जो तुम्हार पथसंग्रह करई। त्रिया तनय निज धन परिहरई॥ बाहन बसन विविध भंडारा। राज्य द्रव्य भूषण परिवारा॥ सोदर अति प्रियसदन समाजा। मित्र पिता माता सुखसाजा॥ तुरी भूमिगजअस्त्रसमेता। दासीदास जेनितसुखदेता॥ गोधन आदि बिभूति अनेका। इनतजिलै काकरिय विवेका॥ हिलिमिलि सबसन कीजियनेहा। कबजानिय छूटै यहदेहा॥ दो०॥ सब कर करि प्रतिपाल नित धनपरिवार बढ़ाय। निजधन सों अपनाइये औरको लेइपचाय॥ सो०॥ मोहबचनसुन जीव तामारगसेवन चहत। त्यागन सुखकी सीव तब धीरज असकहतभो॥

चौ० ॥ सुन हमार मत मोहसयाने। ममदेखत तुमआशुपराने॥ शूरन संग सदा हम डोलें। मोहछीन जे बचन न बोलें॥ काकी त्रियकाको सुतगेहा। समरभूमि त्यागत निजदेहा॥ कायरकूर तुम्हारसँगाती। जेहमरी पावत नहिंभांती॥ सतीशरीर हमारअवासा। भस्मकरत तनतजि सबआसा॥ संपतिघटै बढ़ैचहुंभाई। मनहमार नहिं कछुअकुलाई॥ यहिविधि धीरमोह बतलाता। एक एक की सुनतन बाता॥ त्यहि अवसर विवेकतहँ आयो। बिबिध भांति जीवहि समुझायो॥ दो० ॥ जन्महोत तननग्नही अंतहु चलतउघार। ध्यानधरो ममबचनपर नशिमोहव्योहार॥ चौ० ॥ जबरथ शत्रुनसों कठिनाई। त्रियातनय सब छूटतभाई॥ धीरजहीं तब आवतकामा। संपति भवनरहै सबदामा॥ अंतसमय जब यमचर आवैं। मात पिता दासीन बचावैं॥ बाहन तुरीगयम सबछूटैं। पटभूषण आपुहिते टूटैं॥ यमचर बांधि दशोदिशिघेरी। दुर्गतिकरैं जीव सुनतेरी॥ जिन्हेंमोह आपनो बतावै। तेसिगरे यहनै छुटिजावै॥ आपनि नारि बतावत जाही। पुत्रकहत माता निजवांही॥ तासोदर निज भगिनि बतावै। तासुपिता कन्याकरि गावै॥ ऐसयइ पितुमाता सुतहाला। कस तुम्हार साक्षिनकर जाला॥ सदन आपनो जाकहँ भाषौ। कौशालय ताकहँ अभिलाषौ॥ पशुजानत निजगृह करि ताही। पक्षीश्वान मूषगण जाही। मंजारी आदिकजे देही। निजघर समते सकल सनेही॥ दो० ॥ कहो तुम्हारा कैस गृह ये समस्त सझियार। त्यागि मोह ताते चतुर करु हरिमिलन बिचार॥ मोहपराजयप्राप्तभो भैबिवेककीजीत। जीवगहो तबसत्य पथ हरिसों बाढ़ी प्रीत (मनउवाच) ॥चौ०॥ गहोजीवजममारग साँचा। पुनिकसकीन्ह कहो मतराँचा॥ (बुद्धिरुवाच)जब विवेक जीवहि अपनायो। तब ताकहँ निजपन्थ बतायो॥ कहिनि साधनाधारि बिचारी। योगी जस जेकरत नियारी॥ प्रथम बिरागरूपशिखरायो। ता पाछे निज अंग बतावा॥ शम दम कहि

मुमुक्षु पददयऊ। जीव कृतारथ अलकरि भयऊ॥ पुनिमनप्रश्न कीन्ह गिरनाई। सकल वृतांतकहौ समुझाई॥ का विराग का अहै विवेका। का शमदम मुमुक्षु का टेका॥ करै साधना ये नर जोई। परखकहा लक्षणकहु सोई॥ दो० ॥ सुनो तात दृष्टान्त शुभ परख साधनाचारि। अस्तऽयस्त निर्णयनकछु कहौं सकल निरधारि॥चौ०॥ ब्रह्मादेव राज अहिराजा। यक्षप बरुण सूर यम भ्राजा॥ भूपति रंकधनी सुखखानी। कामी कुटिल गुणी अज्ञानी॥ तिहुँपुर देहधारि जे प्रानी। जो कृतभोग अधिक सुख मानी॥ सो समस्त दुखदा अनुरागी। काकविष्ट सम लखै वि-रागी॥ असिमति जासु देखियेभाई। सो वैराग्य योग स्यवका-ई॥ देहअनित्य सदा छलैकारी। आतम नित्य स्वछंद बिहारी॥ सारासार शुभाशुभ जानै। सो विवेक मारग पहिचानै॥ सकल बासना तजिसंसारी। शम दम दान दया अधिकारी॥ दो० ॥ विषयदोष निरखैनहीं दुखसुख लखैसमान। आज्ञा गुरु श्रुति शीशधरि विचरै जगत सुजान॥ अति.श्रद्धा यक चित्तह्वै ध्यान समाधि लगाय। ताहि समाधी कहत जग योगिराज सुखपाय॥ चौ०॥आवागमन त्यागहितभाई। बहुबिधि करैयोग चितलाई॥ बासररैनि ईशपद ध्यावै। सोमुमुक्षु पदधारि कहावै॥ यहि बिधि सकल साधनासाधै।भजैआपु आतमनिरुपाधै॥ पूंछि बहुरि मन यहबुधिपाहीं। चित्तअहंमन बुधितन माहीं॥ बसतसकल गावत कविराजा। निर्णयकरि बरणौतिनसाजा॥ सुनोतात तिहुँपुरकर ज्ञाना। बसतचित्त बुधकरत बखाना॥ प्रथमहिं जो विचार कछु आवा। चित्तवहै ज्यहिजीव चितावा॥ करिलेहौं देहौं मैंयेही। शोचत यहै अहंकहु तेही॥ दो० ॥ बहुविधिकरै विचारजो काज सिद्धिकेहेत। सोहै मनमन जानिये बरणत बुद्धिनिकेत ॥ सब को थिरकरिदेइजो सुन्दरसिखदैतात। सोबुधि जाउपदेशते काज सिद्धिह्वै जात॥ येई अंतःकरणमत भाषत बुधजनचारि। अन्य भावना होयजो सोबरणौं निरधारि (मनउवाच) लोगकहत सं-

सारके करणयोग तिथिवार । ऋक्षसहित पंचांगशुभ करतसुसिद्धि विचार ॥ चौ० ॥ जबपंचांग अशुभ यहहोई । सिद्धिकाज तबहोय न कोई ॥ तहां कौनविधि कारज करई । होइ न हानि लाभ संचरई ॥ सोविचार म्वहिंकहौ कृपाकरि । ह्वै प्रसन्न उरअधिक दयाधरि ॥ दिशाशूल योगिनी बतावैं । चन्द्र राहु शुभ अशुभलखावैं ॥ करै न गौन हानि अनुमानी । जबये अशुभलखै जगप्रानी ॥ विष्टमुहूर्त्त विचारत पंडित । कारज कृतलहि सगुन अखंडित ॥ योगीजनन विचारत सोई । गौनसिद्धि कारज सिधि होई ॥ यहसिद्धांतकहौ समुझाई । समदुबिधा सबजाइ नशाई ॥ दो० ॥ गेहीजन रोगहिलहत औषधि करत अनेक । रुष्टपुष्टयोगी रहत बिनऔषधि गहिटेक ॥ मज्जन भोजन शैन लघुशंका शंका जौन । इनहींके विपरीतता होत रोग ग्रह तौन ॥ इन सबको सिद्धान्त जो सोम्वहिंकहौ बुझाय । पांचतत्त्वको रमणतन ताहि देह समुझाय(बुद्धिरुवाच)चौ० पूंछसि भलविचार सुखखानी । कहिहौं सकल सुमिरि पदवानी ॥ यहपंचांग सत्यकरि जानों । शुभअरु अशुभहिये अनुमानों ॥ ज्योतिषमत न योगमतभाई । सबविधि सिद्धिसिद्धि मनपाई ॥ तिथि अरुबार योगशुभहोई । सकल सिद्धिदा अशुभ न कोई ॥ सबहि उचित सबकरैं विचारा । याहीकर विशेष निरधारा ॥ ज्यहि मतयेन शुभाशुभ भाषैं । सब विधि मंगलसिद्धि प्रकाशैं ॥ सो सुरज्ञान सुखद सबभांती । धरियध्यान तापर दिनराती ॥ बरणौं सुरज्ञानहि बिस्तारी । निज मतिसम लखि ग्रंथ पछारी ॥ दो० ॥ यह समुद्रवत ज्ञानहै बीच श्वासको गौन । निर्णय कारज जगतको जलजीवन समतौन ॥ तत्त्वनको निरधारजो सो अगाधता जानु । बहु प्रकारके भेदते मिलत सरितवत मानु ॥ तासमुद्रके पारको जानचहै नरकोय । बोहित बिन आरूढ़भे पारजाय किमिसोय ॥ चौ० ॥ एकपरंतु मोहिं बलुभाई । करैस्वामि गुरुमोरि सहाई ॥ आमित तरणि आपुके बारा । बनैतो बेगिहि होइ उतारा ॥ कहिहै सो सहाइ

जनजानी। स्वहिंभरोस यहमनक्रम बानी॥ ताते बन्दिजलज पद गुरुके। निर्णयकरौं ज्ञान सुरफुरके॥ सुनो सुरोदय ज्ञान रसाला। कही उमापति शंभु कृपाला॥ नाड़ी थित बहुबिधि तनमाहीं। जानतबुध मूरख जननाहीं॥ नाभि अधोखग अंड समाना। सबनाड़िनकर स्वइअस्थाना॥ अध ऊरध तिर्छी चहुं धाई। सहस बहत्तरि नाड़ि सिधाई॥ दो०॥ तिनमहँ दशअति श्रेष्ठहैं प्राणस्थित सोजानु। दशमहँ त्रैसुखदा इड़ा पिंगल सुखमनमानु॥ चौ०॥ चौथी गंधारी अनुमानो। हस्त जिह्वा पुनि पूषाजानो॥ यशस्वनी सातवीं बखानो। अलंबुषा अरु कूहू मानो॥ और शंखिनी कहत सुजाना। येदशनाड़ी सहित प्रमाना॥ अब इनकर विश्राम बताऊं। जगत काजहित ज्ञानलखाऊं॥ इड़ाबाम नासा पुटमाहीं। बसत पिंगला दक्षिणताहीं॥ दौसुर पूरणकरै प्रबाहा। सो सुखमना कहत कविनाहा॥ गंधारी बामाक्ष निवासी। हस्त जिह्वा दक्षिण दृगबासी॥ पूषा दक्षिण श्रुत बिश्रामी। बामकरण यशस्वनि धामी॥ दो०॥ अलंबुषा मुख बासिनी कूहूलिंग बिराम। शंखिनि मूल स्थानबस दश नाड़ी दशधाम॥ त्रैनाड़ी अतिश्रेष्ठजे प्रथमहिं कही बखानि। तिनहींको सबख्यालहै शुभबिचार अनुमानि॥ चौ०॥ गायत्री अजपा सुखदाई। सोहंहंसः दुबिध बताई॥ नित प्रतिगौन श्वास मगहोई। यकइस सहस छसौ कहु सोई॥ निरगम श्वासहँकार बिचारै। सहितबिन्दु कोजैनिरधारै॥ विसरगसहितसकारप्रवेशा। शुभगमंत्रयहअहै गवेषा॥ यहिसम मंत्रन जपनहिं ज्ञाना। तपन कर्मविधानहिं ध्याना॥ सकल भरमना जेजगमाहीं। जपत मंत्र ते सर्ब बिलाहीं॥ सो वृतांत कहिहौं कछुआगे। सुनोतातजय हित अनुरागे॥ इड़ा पिंगला सुखमन जोई। सकल सिद्धि दायक है सोई॥ दो०॥ इड़ाबाम पिंगलइ्हिन नासारंध्रनिवास। दोनों सुरपूरण चलै तब सुखमना प्रकास॥ चौ०॥ इड़ा चन्द्र थिर कारज दायक। पिंगल रबिचर कारज लायक॥ सुखमन

सकल काजकी भंगिनि। केवल ईश भजन की संगिनि ॥ जब सुखमना श्वासमग होई। तब न काजकीजो जगकोई॥सुखमन ध्यानअग्नि थिवरहई। कारज थिर चरसब सो दहई ॥ इड़ाचंद्र समरूप बखानो। पिंगल भानु विषम पहिचानो॥ इड़ा नारि पिंगला पुमाना। सितअसि असित रूपसो भाना॥ अबसुनुइड़ा काज चितलाई। थिरकारज कीजिय सुखपाई ॥ आभूषण गढ़ गढ़ी बनावै। यात्रादान विवाह करावै॥ दो० ॥ अलंकार मणि बस्त्रको बनवाउब तनधार। दानदेव प्रेतिककरम काष्ठकर्मनिरधार॥ चौ० ॥ स्वामिदरश कीजिये मिताई। बणिज वित्त गृह प्रबिशिय भाई॥ सेवा कर्म कृषी आरंभा। बीज बवन मखकर प्रारंभा॥ दिक्षादेइ मंत्रकहुँ जपई। विद्यारंभ गेहनिज थपई ॥ दरश बन्धुअरु बारि बँधाउब। रस साधन शुभ बाग लगाउब॥ बापीकूपसमहल तड़ागा। करु अग्निचार सहित अनुरागा॥ गीत बाद्य नृत्यादिक कीजै। निधिमहि थापि सकल सुख लीजै॥ भूमिलेब अरु नगर बसाउब। बहु प्रकार जग धर्म चलाउब ॥ अपरौकाज लखौथिर जोई। चन्द्रप्रबाह कीजिये सोई॥ दो०॥ इड़ाकाज वर्णनकिये सुनुपिंगलके काम। दूरि होय भ्रम जगत हिय होवैज्ञान बिराम॥ चौ०॥ शास्त्रारथपुनिकरिय बिवादा। चोरीअरु अखेट परसादा॥गजबाजी रथबाहनलीजै। दक्षिणचार प्रयोगहि कीजै॥ पाट पटाम्बर शस्त्र मँगावैं। भेषज करि बिष भूतहटावैं॥ युद्धगमन दक्षिण सुरकरई। निश्चय जीति शत्रुपद हरई॥ प्रिय प्रसंग करु भानु प्रबाहा। सोवन भोजनादि सुख लाहा॥ क्रयबिक्रय सुपुष्य अस्नाना। भयमारग ब्योहार सुजाना॥मोहन उच्चाटन बशकर्मा। अस्तंभन मारणजे धर्मा॥खर उष्ट्रादि महिष असवारी। गज अश्वारोहण सुखकारी॥ दो० ॥ तीरथबत इत्यादिजे चरकारज जगमाहिं। रबिनाड़ी महँ सिद्धि ते होवत संशयनाहिं॥ सो०॥ जबसुखमना प्रबाह होवै दोनों सुरनमहँ। तबनकाज कहजाहू अर्थहानि जिय हानिलखि ॥

चौ० ॥ शुभअरु अशुभ चरस्थिरकाजा। सुखद दुखद दुहुँ भांति समाजा ॥ काजन प्रश्न न गौनियभाई। जब सुखमना बाह द-रशाई ॥ कहुँदक्षिण सुर बायों कबहीं। लखु सुखमना रूपयह तबहीं ॥ केवलकीजिय आतम ध्याना। उठि न थान ते करिय पयाना ॥ दूरिपन्थ स्वारथ अनुरागे। चन्द्रचारलखिचलौ सभागे॥ होयसिद्धिसब बिघ्ननशावै। अर्थसहित निज गृह फिरि आवै ॥ बामकि दक्षिण जोसुर चलई। ताहि बिचारि विबुध मन गुणई॥ बाम बामपद दक्षिण दाहिनि। देइप्रथम सब दिशि दुखनाहिन॥ दो० ॥ ॥ बामचार समपदधरै जैसेद्वै अरु चारि। भानु बिषम जिमि तीनिशर यात्रासिद्धि बिचारि ॥ बामकि दक्षिण जौन सुर पूरण होवै तात। तौनीदिशिं पूंछैचतुर काजसिद्धिह्वै जात ॥ चौ० बामअग्र ऊरध दिशिहोई। बहैचन्द्र सुरपूछै कोई ॥ कारजसकल सिद्धि पहिंचानै। शुभकारी इमि ताहि बखानै ॥ पृष्ठ ओर दक्षिण अध आशा। प्रश्न करै सुर भानु प्रकाशा ॥ सिद्धि सर्ब ताकहँ कहिदीजै। मंगल समुझि सुरोदय लीजै। चहुंदिशि गौनकरिय क्रमयेही। योगिराज बरणत हैं तेही ॥ पूरब उत्तर रबिकीनाड़ी। गमनकरै तोहोय सुखारी ॥ पश्चिम दक्षिण शशि परवाहा। जाय पुरुष उपजै सुखलाहा ॥ यहि बिपरीत गमन जोकरई। प्राणजायकै संकट परई ॥ दो० ॥ शशिमें सम अक्षर कहै जिमि दश द्वादशबीश। वाही दिशिह्वै प्रश्नकृत होय काज कहईश ॥ बिषमबरण बोलैचतुर ज्यों नव ग्यारह सात। भानु उदय दक्षिणदिशा सकल सिद्धिकहु तात ॥ उदय सुखमनाहोय जब तबपूंछै जोकोय। अफलहोयँ कारजसबै कहकवि ग्रन्थनि टोय ॥ चौ० ॥ अब तिथिआदि लग्न अरुबारा। चन्द्र सूरसँग करौं बिचारा ॥ शुक्लपक्ष प्रतिपदा जोपावै। तादिनते शशिउदय बतावै ॥ तीनिदिवस शशिउदय प्रधाना। पुनि रबि बहुरि चंद्र फिरिभाना ॥ यहिबिधि कृष्णपक्ष दिनतीनी। परिवाते रबितिथि गनिदीनी ॥ फिरि चन्दा पुनि भानु प्रकासा। समुझत यो-

गिराज सुखबासा ॥ परिवा शुक्लपक्ष शशिराजा। बहै चंद्र उपजै सुखसाजा ॥ कृष्णपक्ष परिवा रबि बहई। सकलानँद दायक कबि कहई ॥ शशितिथि रबि रबि तिथि शशिचारा। अतिकलेश तबचतुर बिचारा ॥ दो० ॥ बहै क्षपाकर द्वैजतिथि शुक्लपक्षभरि पूरि। मंगलमत सुरज्ञानके सुख उपजै तनभूरि ॥ चौ० ॥ प्रात समय शशिनाड़ि प्रकाशा। अरु मध्याह्नहु चन्द्र बिलाशा ॥ संध्याकाल दिवाकर चारा। सबबिधि सुखद मिटै दुखभारा ॥ रहै दिवस भरि शशि सुरमाहीं। अन्यभाव डोलै जब नाहीं ॥ निशिभरि उदय भानुकर होई। अलपकाल नाशक है सोई ॥ यहं संयोग जानि परिहरई। सहि दुख अल्पकाल नर मरई ॥ पूरुबवत शशि सूर चलावै। पूरण आयुहीय सुखपावै ॥ पांच तत्व पूरब जेगाये। जिनकरि सब जीवन तनपाये ॥ क्रम क्रम बहत श्वासमहँ सोई। महिजल पवन शिखी नभजोई ॥दो० ॥ अहनिशि द्वादश बारतन सक्रम होवत भाय। जगत काजहित हेत सबकहौं सर्ब समुझाय ॥ चौ० ॥ द्वादश राशि जगत सब जानै। उदितहोत रबि चतुर बखानै ॥ वृष अरु कर्क कन्यका जोई। वृश्चिक मकर मीनयुतसोई ॥ इनषट लग्ननमहँ शशि बासा। करिय काजलखि लग्न प्रकासा ॥ मेष मिथुन हरितुला बखानौ। धन घटराज भानु जियजानौ ॥ जो निर्णय आछी बिधि करई। तौ येराशि त्रिधा उच्चरई। मेषरु कर्क तुला खग जानौ। इनमहँ रबिकर योग बखानौ ॥ वृष केशरी कुम्भअलि जोई। योग निशाकर शुभदा सोई ॥ मीन मिथुन कन्या धन राशी। द्विःस्वभाव सुखमना निवासी ॥ दो० ॥ चन्द्रयोग थिर काजकरु भानुयोग चरसाधु। सुखमनमें सब त्यागिकै निजआ-तम आराधु ॥ दिनकर निशिकर योगमहँ शुभ अरु अशुभ बि-चार। काजभंग सुखमन चलत करिये बुध निरधार ॥ चौ० ॥ गुरौ शुक्र बुध औ शशिवारा। बाम नाटिकायोग बिचारा ॥ भौम शनीचर रबिदिन जोई। सूरजयोग सुखद कहुसोई ॥ गुरु बुध

भृगु शशिदिन सितपाखा। चन्द्रउदय उपजै सुखलाखा॥ असित पक्ष रबि शनिमहि बालक। डोलै भानु मनौं दुखघालक॥ यहि बिधि लग्नबार तिथि जानी। रबि शशियोग सोकहौ बखानी॥ काज शुभाशुभ जगके जेते। पूरबयोग जानि करुतेते॥ होइ न हानि काजकहु भांती। श्वास निरत जोरह दिनराती॥ मूरख नरहि न यहमतदीजै। प्राणहानि धनहानि सहीजै॥ दो०॥ लघुशंका बामेसुरहि शंका दहिने माहिं। भोजन सुरपिंगल बिषे कीजिय संशय नाहिं॥ बामे करवट शयननित कीजै चतुर बिचार। यहिबिपरीत किये बिबुध होय रोग अधिकार॥ दश दिनके बिपरीतते अधिक रोग तनहोय। सो बिचार उरराखिये हानि लहै नहिं कोय॥ जौनराशिके होहिं रबि तासु उदय पहिचानि। लग्न बिचारै सहजमत मंगलदास बखानि॥ चौ०॥ अबसुनु तत्त्व बिचार रसाला। कहोजौन बिधि शंभुकृपाला॥ पांचौतत्त्व श्वासमग बहई। सुखद दुखद दोनों बिधिअहई॥ परखब कठिनयोग बिनुजाने। सरल परख जो कहत सयाने॥ सोहौं बदत सुनो चितलाई। तजि दुबिधा देखौ सुर भाई॥ द्वादश अंगुल जबसुरडोलै। तबमहितत्त्व भलीबिधि बोलै॥ षोड़शअंगुल होय प्रवाहा। श्वास तत्त्व जल कह कबिनाहा॥ अंगुलाष्ट मारुत निरधारा॥ चतुरांगुल सुरअग्नि बिचारा॥ पूरण होसुर बाहिरनाहीं। गगनतत्त्व कबि भणत तहांहीं॥ दो०॥ अपरौपरख जो योगमत ताहिसुनो चितलाय। तत्त्वपरखि पुनि काजकरु हानिनहोवै भाय॥ चौ०॥ मध्यमगौन भूमिसुरमाहीं अधोगौन सुरनीर लखाहीं॥ ऊरध गौन श्वास शिखि बासा। त्रिजगबायु अरु शून्यअकाशा॥ महिजल तत्त्व दुवौ शुभ भाई। मध्यमफल शिखिचार बताई॥ गगनमरुत अतिअशुभ बखाने। हानि मृत्युदायक पहिंचाने॥ मध्य अचल सुखदा सुरजानौ। अध आनन्द रूप अनुमानौ॥ ऊरधश्वास निधनकी दाता। तिर्यगमें उच्चाट कहाता॥ गगन सदा सब काज नशावत। कौनौ

सिद्धि न जगकउ पावत ॥ यहिबिधि जानितत्त्व कृतकाजा । लहै हानि कोउरंकन राजा ॥ दो० ॥ शीशबास नभकंधशिखि वायु नाभिमहँ बास। जानुदेश महँभूमिजल पाददेशसबिलास॥सो०॥ गगनतत्त्व जबजानुसकलकाज तब त्यागिबुध। मनथिरकरिधरि ध्यानु भजुपरमातम परमनिधि ॥ दो० ॥ मंगल शिखिमय रवि धरा शनिजलमय जलराह। दक्षिणनाड़ी योगशुभ भणतसर्वकवि नाह ॥ सोमनीर मयइलाबुध गुरुमय पवनसुजान। शुक्र अग्नि मयकहत बुध वामनाटिका जान॥ चौ० ॥ तत्त्वपरख अवरौसुनु भाई। कहौंबहुत बिधि त्वहिं समुझाई॥ चतुष्कोण हो लैरँगपीता। मधुरस्वाद भोगदा अभीता ॥ यहगति धरातत्त्वकी होई । कहो उमा प्रति शंकरसोई ॥ रक्तरंग कटुस्वाद बखानो । ऊरध गौन अग्नि पहिंचानो॥ श्वेतबरण अरु स्वाद सुखारा । वर्तुल गौन जानुजलधारा॥ रंगसितासित अमिल सुस्वादा। तिर्यगगौन पौन सुरनादा॥ जलकस स्वाद रंगतस जाको। सर्बगौन सुर नभकहुवाको। यहिप्रकार लखि तत्त्वन भाई। सर्ब काज तजु गगनहिं पाई ॥ दो० ॥ महिगुरु गुरु जलशनिभृगौ शिखि गुरुर-विमहितात। पवनकोगुरुबुध गगनकेशनिअरु राहुकहात ॥पूरुब ते जानतचतुर समुझौयाहि बहोरि। पुनिकारज कछुकीजियेमिटै बिघ्न शतकोरि॥सो० ॥ आगमकहत बिचारि योगीजनजे योग वित। कहौंसकल निरधारि सुनो चतुर जनग्रन्थ लखि ॥ चौ०॥ चैतशुक्ल परिवाजब आवै॥ प्रातसमय निजसुरचितलावै॥ लगै मेष संक्रांती जबहीं । बेलाप्रात बिचारै तबहीं ॥ संबत भरिकै कर्मबतावै। बिनायोग लखि कोउ न पावै॥ यहिप्रकार योगी-जन जानत। ते निजश्वास निरतसुख मानत ॥ पृथ्वीतत्त्व जो बहै प्रभाता। तौ यहि भांति चतुर कहु बाता ॥ जग सुभिक्षवृद्धि नृपहोई। अधिक वृष्टि सुख पूरण सोई॥ उपजै अधिक अन्न जग माहीं। सकल उपद्रव रहित तहाहीं॥ बामेसुर बिशेषफल दायक। दक्षिणचार समः सम लायक ॥ श्वासा मग जलतत्त्व

बिलोकै। समयसुखद सुख उपजै लोकै॥ होयवृष्टि बहु बिधि जगभाई। अरु सुर्भिक्ष निरोगहि पाई॥ गृहगृह मंगल चार बतावै। जब जल तत्त्व चन्द मग पावै॥ मध्यम फल सुर भानु प्रवाहा। भाषत सकल बिबुध कबिनाहा॥ दो०॥ डोलै श्वास जो अग्नि मय राजभंग तबजानु। कालपरै भयभीत जग रोग ग्रसित अनुमानु॥ अल्पवृष्टि अन्नादिहू उपजै अल्पजहान। समय निषिद्ध बिचारिये गावतयोगि सुजान॥ चौ०॥ होयप्रात सुर पवन प्रचारा। ईति भीति जलअल्प बिचारा॥ अति उत्पात जगतमहँ होई। समय दुखद कहुँ सुखद न सोई॥ बहैमेष संक्रांति अकाशा। शून्य फलहु अन्नादिक नाशा॥ अतिहि कराल समय तब जानिय। दुखद समस्त भांति अनुमानिय॥ नीरमही सुखदायक दोई। अन्य तत्त्व नहिं सुखकर कोई॥ यहमत कठिन न सबसन होई। चतुरसुजान लखत कोइकोई॥ अबआगे पुनिध्यान बिचारा। करिहौं निजमति सरिस पुकारा॥ जाकेमन आवै सो कीजो। योग कर्म करिताहि लखीजो॥ दो०॥ श्वास निरतअहि निशिरहै समुझै सो सुरज्ञान। साधन बिन गुहबिन चतुर खोजौ सकलजहान॥ मंगलजानत योगनहिं लोग कहत स्वइबात। मोमनमें विश्वासनहिं औरनके मनतात॥ चौ०॥ सुनो जगतके काज अनेका। चितथिर करिपुनि सहित विवेका॥ जल महि तत्त्व बामसुरपाई। थिरकारज कृतसब सुखदाई॥ पावकपवन संगरविनारी। चरकारज करिहोइ सुखारी॥ तत्त्व बार तिथि राशि गनाई। सुरअरु पक्ष होइ यकठाई॥ चन्द्रयोग अथवा रवियोगा। थिरचरकाज करैंजग लोगा॥ सिद्धि समस्त सर्व सुखहोई। हानिकाहु बिधि लहैन कोई॥ जापर कृपा करैं जगपालक। यहिबिधि लखै युवाअरु बालक॥ तजि मान्यता बड़ाई दोई। कहौ न जानि सुरोदय कोई॥ दो०॥ जब आछी बिधि योगमत जानिलेहुयहिभाय। तबबहुकाहूचतुरको बुधजन देहुबताय॥ सकल सिद्धिकी सिद्धिहै सबयोगनको योग। सूरु-

ख त्यहि जानतनहीं लखत सुलक्षखलोग ॥ चौ० ॥ मरुत तत्त्व महँगर्भजो रहई। दुखीविदेशी उपजै कहई ॥ बह्नितत्त्व के योगहिपाई। अवैगर्भ सुतजियैन भाई ॥ धरातत्त्व मधिगर्भ प्रवेशा। उपजै बालक सुखदधनेशा ॥ भोगवन्त सुन्दर तन होई। प्रीति करै वासँग सब कोई ॥ नीर मध्य भागी धनवाना। होवै बालक चतुर सुजाना ॥ प्रगट बिनाशक व्योम बखानो। सुखमनके संसर्गहि जानो ॥ आदित राजसुवन कर योगा। खगपति राजसुता कथ लोगा ॥ सुखमन मध्य नपुंसक भाषत। जे जन योगधर्म अभिलाषत ॥ दो० ॥ यहि बिधि भोगिय नारि निज तनया सुत हित लागि। तत्त्व विशेषि बिचारिये देखियहिय निजजागि ॥ प्रश्नगर्भकी करैकउ प्रथम श्वास निजदेखु। तापाछे उत्तरकहिय सरमधिज्ञान बिशेखु ॥ चौ० ॥ पृथ्वीजल सुत योग प्रकाशै। मरुत सुता शिखि गर्भ बिनाशै ॥ क्लीव गगन अथवा सुकुमारी। अबनिर्णय सुनुचतुरअगारी ॥ निजदक्षिण सुरप्रच्छक दाहिन। नृप समसुत उपजै भ्रम नाहिन ॥ प्रच्छकचंद स्वचंद प्रधाना। कन्याविदित करौ बुधिवाना ॥ निजसुर शूर निशाकर वाको। होयकुमार सदृढ़कहु ताको ॥वाकरभानु क्षपाकर आपू। पतन जन्म ते शोक सँतापू ॥ निजवाको एकैसुर होई। सुखद बिचार भनौबुध सोई ॥ गुरुबिन कठिन जातनहिं जानो। गुरु गमतकल परत पहिंचानो ॥ दो० ॥ ऊरधसमदरशी भणत धातु जीव हियहेर। अधोमूल इस्थिरमनी चतुरबखानत टेर ॥ धरा मूल मधि उदकहरि जीवरूप पहिंचानु। तजेधातु नभ चतुष्पद जानि स्वतत्त्व बखानु॥ चौ० ॥ पूरण सुर पूछै नर कोई। शून्य ओर नहिंकारज होई ॥ शून्यसमय पूछै हितकारी। पुनि पूरण सुर सुखद बिचारी ॥ कहै बिदेश गयो ममनेही। बहुत दिवससुधि लहीन तेही ॥ दिशाबार तिथि अक्षर जानो। सुर संयोगहि पायबखानो ॥ सुभगयोग सब सुखद बताइय। यहि बिपरीत अरोग लखाइय ॥ सकलयोग सूरजकर होई। प्राचीदिशि उत्तर

शुभसोई ॥ पश्चिम दक्षिणग्रशि संयोगा। आइहि सहितसमाज सभोगा ॥ यहिबिपरीत दुखद बुधभाषत। जेनिजसुर निजवश करि राखत ॥ दो०॥ धरातत्त्व अस्थिरसुजल आवन थोरे काल। पवनपयान कृतेशिखी गगननाश तनबाल॥चौ०॥ गमनहेतपूछै कउआई। तिथिदिन सुरबिचार चितलाई ॥ दक्षिण पश्चिमशशि जलभूमै। फलदसुखदकोउ दुखद न दूमै ॥ भानुयोग पूरुबउत्तर दिशि। देहबताइ बिचारि दिवानिशि॥अबआगे रणभूमिबिचारा। कहिहौं हौंनिजमति अनुसारा ॥ चन्द्रयोग सब बिधि शुभहोई। वरण वार तिथि पक्षौ सोई ॥ ऐसे भानु योग जबपाइय। जैति युद्ध महि सकल बताइय ॥ दोनों दिशिके पूरुष आई। करैंप्रश्न इउ युद्ध जताई ॥ पूरण सुर ज्यहि दिशि निज होई। प्रथम प्रश्न तिहि दिशिकृत जोई ॥ दो० ॥ समर भूमि सो जीति है यामें संशयनाहिं। शून्य स्थलके ओरही पूछन बुहुंजन जाहिं॥ जो पाछेते पूछिहै बिजय तासुकी होइ। यामें संशय नाहिनैं कह हर निज मुख सोइ ॥ चौ० ॥ बामेसम अक्षर जयकारक। दक्षिण विषम वरण अरि जारक॥ सुखमन अमितकष्ट रणदा-यक। काहूबिधि नहिं सो रण लायक ॥ दक्षिण बाम जो पूरण होई। त्यहिदिशि पूछैजीतै सोई ॥ जो आपुहि रणकाज पधारै। तौ दक्षिणसुर बिजय बिचारै ॥ शशि सुरबाह प्रथम गहखेता। बिजय लहै निज भूमि समेता ॥ अग्नि तत्त्व दिन तिथि रवि केरा। पाइ युद्ध गमनै कबिटेरा ॥ दैवयोग अस योगहि पावै। शत्रु जीति सहजै घरआवै ॥ बाम दहिन ज्यहि दिशि कहकोई। बहै न निज सुरतिहि दिशिसोई ॥ दो० ॥ मही तत्त्व जो होइ तहँ उदर घात तब भाषु। घात चरणजल अग्नि उर त्योंसमीर अभिलाषु ॥ सो० ॥ गगन मांझ शिर घात होवैकुछ संदेहनहिं। पांच तत्त्वकी बात सुर बिचारि रणभूमि कहु ॥ चौ० ॥ बहैजौन सुर त्यहि दिशि आई। पूंछै समर बीर सुखपाई ॥ तब निजसुर महँ तत्त्व बिचारी। कहु सिद्धांत योग सुखकारी ॥ समता धरा

बिजय जल देता। कहु रणभंग अग्नि कृतखेता॥ पवनमृत्युदा अशुभ अकाशा। समर देह इउ करत बिनाशा॥ बामे बामे सन्मुख धावै। दक्षिण पृष्ठ शूरलखि जावै॥ जीतै समर कुशल गृहआवै। योगिराज यह योग लखावै॥ पूरुब उत्तर बामबिशेखी। दायक बिजय कहत सुरलेखी॥ जयदा भानुदिशा द्वौ जोई। दक्षिण पश्चिम जानोसोई॥ दो०॥ होइ दिवाकर उदय जब करु तब नारि प्रसंग। दुहुँ दिशि बाढ़ै नेहभल होवै प्रीति अभंग॥ चौ०॥ अर्द्ध रैनि तिय अँगलिपटाई। निज सूरजप्रिय चंद्र मिलाई॥ पियै पुरुष कंदर्प समाना। होवै तिय हियसुख परमाना॥ नारिपवन शशिको निजभानै। करैनारि स्ववश्यअनुमानै॥ जो यह योग सिद्ध नर करई। ऊषा अनिरुध गति रति चरई॥ एक जीवद्वजहि धरि करैं। जीव वश्य होवै अतिहर्षै॥ भानु चार आलिंगत नारी। उपजत सुत सब बिधि सुखकारी॥ अरु तिय वश्य जन्म जगहोई। सकल भांतिसुख नारिहिसोई॥ शशिमें तनया रति सुख हानी। यहै जानि कृत भोग न ज्ञानी॥ दो०॥ बार बार बर्जति अहौं प्रिय प्रसंग शशिचार। जो कोउ करिहौ हठ सहित हानि बिरुद्ध अपार॥ सो०॥ जो पूंछै कोउ आय बर कन्याके ब्याहको॥ दीजैचतुर बताय सुर तिथि बार सुलग्न गनि॥ चौ०॥ चंद्र योग सब बिधि भल पाइय। टीका लग्न प्रबीन बताइय॥ सामग्री बिवाहकी जोई। चंद्रयोग महँ कीजिय सोई॥ भानु योग ब्याहनको जाई। भाईबन्धु जिमावै भाई॥ भाँवरि भानु मध्य शुभडारै। बिघ्नरहित निजसदनसिधारै॥ जो साधन यह चतुर बखानो। ब्याह करत सब सुख पहिंचानो॥ अन्य भांति उपजै दुखदेहा। रंग भंगहोवै न सँदेहा॥ ऊषा काल उदय बिपरीता। रविग्रह शशि शशिग्रह तसजीता॥ अति अनीति बहु दोषन लावै। अब कबि तिन कर नाम गनावै॥ छं०॥ सुनु प्रथम मनउद्वेगता अरु द्वितियधनको नाशहै। पुनि तृतिय गौनौं कहुं चतुर्थे दृष्टि सुभग बिनाशहै॥

पंचम विनाशक सुख सबै षष्ठम स्वपदकी हानिहै। फिरि मृत्यु अष्टम होइ निश्चय कहत योग बखानिहै॥ दो०॥ महाकठिन यह समुझिबो गुरु बिन सुनो सुजान। शिष होवै निज धर्म दृढ़ तब सिखवत गुरु ज्ञान॥ चौ०॥ देन लेन रवि योगहिकीजै। दीजैबहु काहू ते लीजै॥ जोशशि योग लेइ ऋणकोई। जन्मांतर लगि अऋणनहोई॥ ऐसे योग क्षपाकर माहीं। देइबहुरि पावै सो नाहीं॥देइ लेइ सुख मनमहँकोई। दूमहँएककाल बशहोई॥ योगतमारि करोव्यवहारा। यहितेशुभनहिं आनबिचारा॥ धनी पास जब जाइयभाई। बैठियदाहिनओरभलाई॥ दाहिनसुर निज अर्थ उचारै। रवि सँयोग धनलेइ उधारै॥ बिन श्रमअऋण होइ ऋणटूटै। आनँद अमित बैठिगृहलूटै॥ दो०॥ समाचार पूंछै कोउ रोगीको त्वहिंआय। निजसुरभेद बिचारिकै देवै ताहि बताय॥ चौ०॥ दिनकर योग दाहिनी ओरा। पूंछै जियै योगिकहँ भोरा॥ बामअंग निशिनाथ प्रवाहा। रोगीजियै मिटै दुखदाहा॥ चंद्र ओर पूछै रबिबाहा। निश्चय मरणजीव कोताहा॥ जब शशि बहै दहिनि दिशि पूंछै। रोगी मरै मनोरथ छूंछै॥ जौननाटिका बहैसमीरा। पूंछै तौनओर मतिधीरा॥ रोगी जीवन तुरत बतावै। उमानाथ यहउमहिंलखावै॥ आन योगसब शशिकरसोई। केवलसुर सूरज करहोई॥ कुछ दिन बादि रोगकर नाशा। प्रच्छकसोइ सि करिय प्रकाशा॥ दो०॥ दक्षिण दिशिते आइकरि बामेपूछै कोय। बामेसुर बायुर्बहै सुखदयोग कहुसोय॥ चौ०॥ शशिदिशिते फिर रबिदिशि आवै। रबिन बहैरोगी दुखपावै॥ बाम ओर पूछै रबिबाहा। कछुककालरोगी दुखदाहा॥ जहांशून्य सुखमन कररसजू। रोगीनाशैहोइ अकाजू॥ कोटि उपाय रोगि मरिजाई। कहोउमाप्रति शंभुगोसांई॥ कालज्ञान आगे अब भाखौं। जगत काज निज गुप्त न राखौं॥ जोसुर ध्यान रैनिदिनधरई। कालज्ञान ताको लखिपरई॥ कर्त्ता सत्य अकर्त्ताजोई। बके चहौंगतिलहै न सोई॥ चतु-

रसुजान प्रकट यहदेखौ । सुरसे परेन जगकुछ लेखौ ॥ दो० ॥ उदय होय बिपरीत सुर एकपक्ष लगुतात । रोगग्रसैतब आय तन सुरमत भाषत बात ॥ चौ० ॥ एकमास इमि जब सुरडोलै । सुहृद बंधुको बिपति अतोलै ॥ पक्षतीनि में तन नशिजाई । प्रकट परत बिपरीत लखाई ॥ कैचन्दा कैसूरजकोई ॥ बहै रैनि दिन पूरण जोई ॥ तीनवर्षलग कालनआवै । पाछूअंत होयबुध गावै ॥ बहै पिंगला द्वै दिन राती । युगुल वर्ष पीछे मरिजाती ॥ तीनि दिवस निशिको सुर बहई । बर्ष प्रयंत आप तन रहई ॥ षोड़श अहि निशि सूरप्रबाहा । मास एकलखि जीवन लाहा ॥ मासप्रयंत चलै सुरभाना । दिवस होइभरि जीवन जाना ॥ सुखमन उदय होय घटि पांचा । छुटैशरीर जानियेसांचा ॥ चन्द्र सूर सुखमनानआई । आनन पवन बाहदरआई ॥ चारिदण्डलगिकाया रहई । पाछू प्राण शमन चरगहई ॥ तरत्रप्रकाश निशा दिनतीनी । मीचुवर्षपीछे कहिदीनी ॥ दो० ॥ दिनसूरजनिशि चन्द्रमा एक मासकृत गौन । जीवरहै षटमास लगि सत्यसत्य लखुतौन ॥ जानिकाल योगीचतुर प्रथम शून्य ग्रहजाय । काल आइ फिरिजाइ तब लेइ समाधि जगाय ॥ सो० ॥ कहो सुरोदय ज्ञान जसकुछमें समुझोहिये । अबसुनु सहित प्रमान अजपाको व्योहार कछु ॥ चौ० ॥ प्रथम मंत्र अजपा जोभाषो । वहै मंत्र दृढ़ जिय अभिलाषो ॥ आसन बहुत योग मतगाये । ते सबौंकरि ध्यान लगाये ॥ तिनमहँ पद्म सिद्धद्वै जोई । एकलगायमंत्र जप सोई ॥ पद्मासन बिशेष फलदाता । शुचिह्वै मंत्रजपै उठि प्राता ॥ मौन जपै जग्रहि सुनैन कोई । अतिफलप्रद जानियबुधसोई ॥ दृष्टि नासिका अग्रलगावै । समन जपैमन आन न आवै ॥ चहुं जसमीत क्रिया बिनहोई । तदपि न तासन भाषिय सोई ॥ जन्मांतर लगिजो यहसाधै । जन्म मरण की मेटैबाधै ॥ दो० ॥ तीनिकाल तिहुं लोकमें बिदित मंत्रयह आहि । साधक याको कौन अस सुगतिमिली नहिंजाहि ॥ चौ० ॥ शंकर बिधि

अवतार मुरारी। यहै मंत्रजपिभये सुखारी। अरु हनुमान परमपदगामी। जपियह मंत्रभये अधिनामी॥ ध्रुवप्रहलाद जप्योचितलाई। शुभगति लहीपुरानन गाई॥ नारद सनकादिक बिज्ञानी। भये स्वेच्छाचार प्रमानी॥ ज्ञानी गुणी मुनी संन्यासी। जपतमंत्र यह परम उदासी॥ कलिमहँ बहुतजीव जपियेही। पायसुगति भे परम सनेही॥ रामानन्द कबीर गोसाईं। सूरसधन पीपा गतिपाई॥ और अनेक जपीयहिकेरे। बसेपुरुष ते हरिकेनेरे॥ दो० ॥ ताकारण अहनिशि चतुर एकबारनित साधु। सुमनध्यान धरिदुचिततजि निजआतम आराधु॥ राजसुखमना कोलहै निशानाथ रविनाहि। कंजासन आरूढ़है तबबिशेष जपुयाहि॥ मोक्षद्वारो जीवकहँ सुखदसुखमना जानु। अपरनाटिका मोक्षदा मंगलहृदयन आनु॥ (मनउवाच) आतमबास शरीरमहँ सोकैसोहै भाखु। दास आपनो जानिकै जनिदुराव कछुराखु॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ आतम करशरीर महँबासा। लिप्तालिप्त दुहूं बिधि भासा॥ जिमि जन जलघट अगणितभरई। सन्मुख दिनकर कैसो धरई॥ पुनिसब घटनि बिलोकैजाई। रविवतरूप सबन महँभाई॥ रवि समान सो रवितेन्यारा। इमि शरीर आतम बिस्तारा॥ अथवा जिमि दर्पण मुखदेखै। दुबिधा भाव बदन नहिं लेखै॥ ऐसेइ आतम बसत शरीरा। लखत सुशुधी परम गँभीरा॥ इन्द्रीसकल सोइ बौरावै। सुथिर आपु कहुँजाइन आवै॥ नैनादृश्य श्रवण बिन सुनई। रसना रसन चाखिसुख गुनई॥ दो० ॥ ज्ञानेंद्रिय जे पांचहैं कर्मेन्द्रिय जेबाण। तिनकरि सोनहिं जानियत सुनुमन सहितप्रमाण॥ (मनउवाच) ज्ञानेंद्रिय कर्मेन्द्रिजे तिनकरिलखो न जाय। फिरिकैसोहै सो कहौ भ्रमणासकल नशाय॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ सुनुप्रमाण तोहिंकहौं बुझाई। लखिआतमगति रहुअरगाई॥ रूपाक्षीनिरखै रविकासा। ताबिन निशि बुध करत प्रकासा॥ सूझैकुछनहिं नैनपसारे। सबकछुउलखै सूरबिनकारे॥

रविदेखनहित रविनहिं चाहिय। इमिआतम स्वभास तनआहि-य ॥ औरवस्तुखोजै लगिभाई। दीप प्रकाश कीजियत धाई ॥ प्रज्वलितदीप खोजिवेकाजहि। कोप्रकाश दायक सुखभाजहि ॥ वस्तु समस्त नैन सो देखै। नैनलखन हितस्यहि अवरेखै ॥ है प्रकाश निधि आतमऐसो। दीपकअक्ष भानुभन जैसो ॥ दो० ॥ रविरविदीपक दीपसों नैन नैनसोंदेखु। और वस्तुनहिं चाहिये इमिआतम निजलेखु ॥ चौ० ॥ मैंतूचित अहँकार कहावे। चारों एक रूपहै जावे ॥ यकमति यकगति ह्वै जबढूँढ़ै। तब निरुपाधि लखैंगतिगूढ़ै ॥ इन्द्रीसर्व सोमन आधीना। मनसो बुद्धिअधीन प्रबीना ॥ जीवाधीन बुद्धिबुध कहई। बिन सूक्ष्मधी अलख न गहई ॥तजिभ्रमणा दुविधासंसारी। मारगज्ञान लखैसुखकारी॥ उदयज्ञान होतैतनमाहीं। दुखदासकल व्यकार नशाहीं ॥ यावद्भ्रमणा नशै न भाई। तावद्मोह अणी न नशाई ॥ मोह नशे-बिनसुबुधि न होई। बुधिबिन आतम लखैन कोई ॥ दो० ॥ आतम निजचीन्हेबिना जरामरणन नशाय। जन्ममृत्यु के नाश बिनु लहै न ईश्वरभाय ॥ (मनउवाच) सो० ॥ ब्रह्मसोकैसोआहि यहमोको समुझायकहु। निर्गुणगुण अवगाहि तूसमर्थ सब भांति बुधि ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ कहौं कौन बिधि ब्रह्मस्वरूपहि। कहतबनत नहिंरंकन भूपहि ॥ प्रजाकहौंतो भूपति कोहै। भूप कहतपुनि प्रजानसोहै ॥ अलखकहौं तो लखकोउ औरै। लख किमिकहों अलख शिरमौरै॥ जोअरूप भापौंभगवानै। रूपपान कोउदूसर जानै ॥ गुणनिधि कहों अगुणकहि कहऊं। अगुणकहत फिरिगुणनहिं लहऊं ॥ बरणिकहौं कर्त्ताहैसोई। तौपुनिअहै अ-कर्त्ताकोई ॥ अनुभावअनंत भेदसंभवमें। संभवबर्णत गुणअनुभव में ॥ निराकारजो वाकोभाषौं। तौआकार गृहकहि अभिलाषौं ॥ दो० ॥ कहौंबसतवैकुंठमें अथवाश्वेतद्वीप। तौनहिंज्ञानी मानि है धरेहृदयबुधिदीप ॥ चौ० नारिकहौंतो अयशमहाना। पुरुष कहौंतो दुविधाताना ॥ क्हौंनपुंसक लिंगगवेषा। तौ फिरिज्ञानी

करिहि अँदेशा ॥ सांख्यशास्त्र जोकर्मबतावै। प्रथमचतुर तिनमहँ मन लावै ॥ योगशास्त्र पुनि खोजै कोई । समुझै हृदय रूप हरि सोई ॥ कबि कोविद कउ अस न जहाना ॥ परमात्माकर करै बखाना ॥ वेदशास्त्र कहि नेति पुकारै । और कहा जग जन अब भारै ॥ ईश्वर सब जीवन तनवासी। बिमल बुद्धि यह भणत उदासी ॥ आपनपौ चीन्हे जो चातुर । समुझै ईशरूप वह सातुर ॥ दो० ॥ आतमही परमातमा याको जानैकोय । मिलै ईश ह्वै ईशमें जलनिधि जलसम जोय ॥ ज्ञान बिना तिहुँलोकमें ताहि न जानै कोय । जोकउ ज्ञानी हियलखै कहिनसकैगो सोय ॥ द्वैत भावते रहितहै उपमा दीजिय कौन। उपमा बिन संसारमें समुझिसकै बुधतौन ॥ चौ० ॥ जबद्वउ सूक्षम थूल शरीरा । ह्वै चैतन्यगहैं सुखपीरा ॥ अरुजब स्वप्नमांझ धसिजाई । मन भ्रमाय निज भ्रमणा पाई ॥ पुनि सुखोप्ति जबहोय जीव कह। तीनि बहिक्रमकरि बिचार गह ॥ इन तीनोंमहँ आपुहि माहों । लिप्तरहै सब भ्रम मिटिजाहीं ॥ तबवैहोय तुरिय हरि लीना । जहांहोय मन सुख दुखहीना ॥ प्रथमावस्था तीनि बताई । हरिपद प्रीति रहै लवलाई ॥ जपैमंत्र पूरुब जो भाषो । सदृढ़ बुद्धि आतम अभिलाषो ॥ तब मिटिजाय अवस्था भूरी । तुरियः पदहिरहै गति पूरी ॥ दो० ॥ कठिनज्ञान मारगरहै बिरलो कोउ ठहराय । जोसमर्थ पूरबतपी गहै सोय चितलाय ॥ जानब श्रीजगदीश को खोउब मनों अपान । को ऐसो समरथ जगत फिरिकैकरै बखान ॥ चौ० ॥ जिमिपुतरी लौनकीभाई ॥ नीर सिंधुमहँ जाय मिलाई ॥ सो ह्वै जाय मिलितकीलाला । कहौ बहुरिको कहैहिवाला ॥ जो कोउकहै कि मैं त्यहि देखा । सो मिथ्या पुतरी दधिलेखा ॥ दूरि दरश करि बहुरि जोआवै । करि अनुमान सोरूप बतावै ॥ कहिनहिंसकहिरूप सबताको । दशदिशि भेद लहो नहिं जाको ॥ जोयेपंथ जगत महँ नाना । तिन सबकर मन सुनु आख्याना ॥ जसबहु अंधगहैं गजधाई

भिन्नभिन्न तनकी हरषाई ॥ कउ कटि गहे कांध कउलागो। उ-दरतले कोउ पद ऌवैभागो॥ दो० ॥ कोऊगये सुपूंछ त्यहिकीऊ पांजरलाग। हाथी कूटे करषाते लगेचित्त अनुराग ॥ चौ० ॥ य-कठाभये वाद प्रतिवादा। लगोहोय तिनमहँ संवादा ॥ जोकरि लगो सोकरि सम कहई। कांधगहो सोकांध सम लहई ॥ उ-दरगहो सो कहै छति ऐसे। चरणस्परशस्तंभसुजैसे ॥ पूंछ गहे सो सर्पसम वादै। पांजर परश सोभीति बिवादै ॥ काहू लखो न सो सब नागा। झूँठ कहैं न सत्य अनुरागा॥ मानै कोउ न कहे काहूके। द्रष्टा कहै देखि ताहूके ॥ कैसेफिरि समुझैंगे अंधे। लगे न देह मथनके धंधे॥ निज निज सांचु बाद सोभावैं। रूप समस्त सो यों अभिलावैं ॥ दो० ॥ तजि विवाद गजराजकी बहुरि जाय लपिटाय। भिन्नभिन्न तन गहतही मन भ्रमउपजै भाय ॥ सो० ॥ तब सो थोचै हीय पूंछ गही तब पदहि अब। करिकर गह निज जीय उदर दुहूंकर छुवतहीं ॥ चौ० ॥ इमि बिपरीत ठामकेपरसे। भ्रमभयकार उठैनिज घरसे॥ तबअस मत सब करैंबिचाला। द्रष्टासों पूंछैं गजहाला ॥ जानि भ्रमित द्रष्टा समुझावै। सहित सुनै मनभ्रम बहिरावै ॥ भ्रम बहिरात होय समधीते। लहैंभले शुभ मारगहीते ॥ पुनि बहोरि भ्रमखा तिनपाहीं। चतुरसुजान जातु लखु नाहीं ॥ समधी होत ज्ञान भलपावैं। सांख्यशास्त्र तबदृढ़ करिभावैं॥ सांख्ययोग इकमत होयहई। साधक हुवो मुक्त पदलहई ॥ अबद्रष्टाके लक्षण कह-ऊं। भ्रमखा सकलतर्ककी दहऊं॥ दो० ॥ त्यहि सबबिधि गज-राजको परखो होवैतात। आगेपाछे दशौदिशि द्रष्टाताहि कहात॥ चौ० ॥ अंधप्रबोध होयमन बूझे। ज्ञाननैन सों दगन न सूझे ॥ ऐस्यइचतुर साधुजन जानो। द्रष्टावेद गुरूकह मानो ॥ पारब्रह्म परखब कठिनाई। परखतही गूंगाह्वै जाई ॥ बधिर होय ध्वनि सुनत अनाहत। समुझि समुझि निजमन अवगाहत ॥ नहिं स-मर्थजो बरणिबतावै। यहिकारण गूंगा समभावै॥ मूकहि माहुर

देइ भिठाई। किमि कहिसक मृदुता कटुताई। जो माया कृत होयन तिहुँपुर। उपमा योग ईशकी सोफुर॥ माया कृत तिहुँ लोक बतावत। वेदशास्त्र सब मत समुझावत॥ दो०॥ माया पतिके रूपको कहिनसकत यहिहेत। चतुर बिबुध कवि कुशल जग अलखताहि कहिदेत॥ होत अनाहत ध्वनि चतुर यकसुर रागछतीस। सातौसुर वामेंउठत किमिकहिसकतगवीस॥ राग ईशके सुनतकी बधिरसी होतसुजान। निर्णयलख अरुअलखकी सुनुमन सहित प्रमान॥ चौ०॥ पांच ज्ञान इन्द्रिय जो गाई। निर्णय करिकै प्रथम बताई॥ बाणीकरि जोशब्द उचारा। सुनतश्रवण सों बैनपुकारा॥ नैन ज्योति सों लखत जो भाई। घ्राणेन्द्रिय सों गन्धिलखाई॥ त्वचसों परश ज्ञान जोहोता। सो सबलख मायाकर द्योता॥ अपरएक बृत्तांत महावर। कहतसंत अरुवेद जानिफुर॥ मनकरि जो समझत बुधिसेती। मायाधर्म कहौलखि नेती॥ जो समस्त तिहुँपुरकर ज्ञाना। सोलखरूप धरे भगवाना॥ लखबिस्तारसो अपरम्पारा। धरेबिराटरूपकरतारा॥ दो०॥ कहौंअलख अबशोचि बहु ग्रन्थसांख्य अरुयोग। समुझोचतुर न प्रथमहीं अबपुनि समुझैं लोग॥ चौ०॥ माया यहअपार कृतजाकी। समुझत हिय मेरी मति चाकी॥ फिरि किमिकहौं अलखलख नाहीं। लखमेंअलख लखालखमाहीं॥ भूतसमस्त आदिहै माया। ज्यहिनिज बलसबजग उपजाया॥ वाकेआदि रूपहैजोई। वहै अलखलखि परतनसोई॥ जोकोउ लखैसुबुधी ढूंढ़ै। तौसमुझै शुभअलख अगूढ़ै॥ ज्ञानकर्म इंद्रिय सोंजोई। परखि सकत अलभयो न कोई॥ ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय जोसों। परखि परैतो अलख नहींसों॥ अलखै लखत अलखयक आपू। जिमिजानत नभनिज परतापू॥ दो०॥ यहि तेसोहै लखालख परमातम यकभांति। सगुणअगुण लखअलख है भ्रमबिन हृदयसमाति॥ कहो योग सिद्धांत यह निजमति सरस बिचारि। अबजो पूंछैसोबहुरि कहौंसहित बिस्तारि (म-

नंउवाच) कहौबरणि नवभक्तिजे सतसंगादिक तात । अरु नव बिधिको भजनजो सोकहिये बिख्यात (बुद्धिरुवाच)॥ चौ० ॥ सुनुनव भक्तिकहौं मनतोहीं । पूछ्योभल प्रियलाग्यो मोहीं ॥ जबसिद्धांतयोगनिपुणाई । होयनप्रथमकरैयहभाई ॥ नवधाभक्तिफलप्रद जोई । तिनकेकरत अचलमनहोई ॥ सतसंगतिकृत प्रथमसयाने । भलीभक्तिनिज जियअनुमाने ॥ द्वितियेहरि की चर्चाकरहीं । स्वपनों आनधर्मनहिंधरहीं ॥ तृतियेगुरुचरणन सों प्रीती। नेमसहित पूजतश्रुतिरीती ॥ हरिगुणगानअछलनिर्मोहा । भक्तिचतुर्थसुगतपरद्रोहा ॥ वेदपाठहरिमंत्रसुजापा । पंचमभजनभक्तिहरतापा ॥ सज्जनधर्म निरंतरधारे । शीलवंतषष्टम हरि प्यारे ॥ भूतसमस्त ब्रह्ममयदेखै । सप्तमसंत ईशलमलेखै ॥ लाभालाभसोसमसंतोषी । अष्टमहोयनबुधपरदोषी ॥ तजिप्रपंचश्री हरिशरणाई । नवमगहै दुबिधाइबहाई ॥ दो० ॥ यहिबिधि करिनवभक्तिबुध लहैज्ञानसिद्धांत । लहेज्ञानसिद्धांतकेपावैमोक्ष नितांत ॥ मोक्षपरेनहिंआनसुख जानत हैं बुधराज । सांख्यधर्म धरयोगरत चहतमोक्षकोसाज ॥ चौ० ॥ अबसुनुभजन भावनवजोई । करिबिस्तार कहौंहौंसोई ॥ सुमिरणकृत हरियशहित सेती । प्रथम भजन यह भणत सनेती ॥ पूजन क्रम बाणी मन जोई । भाव द्वितीय लहै अघ खोई ॥ करैं बंदना प्रभु पदकेरी । तीजो भजन भणत बुधटेरी ॥ प्रीतम निज हरि कहँ जे जानैं । भावचतुर्थ हृदय अनुमानैं ॥ श्रवणकरैहरि यशछलहीना । पंचमभजन धर्म मतचीना ॥ जो दासत्व भाव हिय धरई । षष्टम भजन भाव भवतरई ॥ निशिदिन हरि चरणन अनुरागी । सप्तमहरिहित होयबिरागी ॥ दो०॥ कीरंतनहरियशकरैदुबिधाभावहित्यागि । अष्टम भजन प्रसिद्ध यह कहत बिबुध श्रुति पागि ॥ चौ० ॥ आतम ध्यानकरै श्रुतिरीती । नवम भजन यह सदृढ़ सप्रीती ॥ यहिकृत जरामरण की फांसी । मुक्तहोय यह भणत उदासी ॥ भक्ति भजन द्वौ भाववताये । करि विवेकहौं तोहिं

लखाये ॥ दोनोंपद निर्वाणहिं दायक। दोनोंचहुं आश्रमकेला-यक ॥ प्रथमहिं ब्रह्माचार बखानो। द्वितियाश्रम सुगृहस्थीजा-नो॥ तृतिये वानप्रस्थ बुधगावैं। चौथेसंन्यासहिं समुझावैं ॥ अ-बचारोंके कर्म बताऊं। सुनुसचेत तोहिं सुमति लखाऊं॥ जब किशोर बयहोवै भाई। ब्रह्माचार तबहिं मनलाई ॥दो०॥ समु-झैसब शुभ अशुभजे धर्मपाप जगमाहिं। त्यागासस भवमें हुलै तज निज धर्महिं नाहिं॥ चौ० ॥ ब्रह्मबिचार हृदय निजगुणई। आनधर्म सबहितसों सुनई ॥ जब दुबिधा भ्रमणामिटि जाई। रहै आपुमें आपु समाई ॥ पूरण प्रथमाश्रम इमिहोई। द्वितिया श्रमहिं गहै बुधसोई ॥ कहे पुराण वेदइतिहासा। करै गृहस्थी धर्मप्रकासा ॥ पुत्रत्रियापरिवारहिं मिलिकै। प्रीति रीति सहर-हिये हिलिकै ॥ एकपरन्तुकरै चतुराई। त्रिय सुत लहि न जा-इबौराई ॥ प्रथम बिचार रैन दिनराखै। गेहाश्रम अहनिशि अभिलाखै ॥ बानप्रस्थ फिरि होइ सयानो। त्रिय सँग रहै न त्रिय रत सानो ॥ दो० ॥ बहुरि धरै संन्यास को त्यागि सकल परिवार। ब्रह्मभजन में रतरहै कृत आतमा बिचार ॥ चौ० ॥ कतहुंक अंतकाल ह्वै जाई। यमनचार सक निकट न आई ॥ स्वर्ग नर्क दोनों ते छूटै। वह समर्थ हरि मिलि सुखलूटै ॥ जुपै गृहस्थी में सनिजाई। तौ वह ब्रह्मबिचार नशाई ॥ ब्रह्मबिचार नशत सुनु ताता। इन्द्रभवन यमसदन सो जाता ॥ जो दृढ़ धर्म गृहस्थीरह्यऊ। अन्तकाल सो सुरपुर गयऊ ॥ दृढ़ता रहित गेह आशक्ता। बानप्रस्थ ह्वै भौन बिरक्ता ॥ रविसुत दूतबांधि त्यहि भाई। नर्कद्वार दीन्हों ठढ़िआई ॥ ब्रह्माचार प्रथम जो कीन्हा। ताते नर्कवास नहिं दीन्हा ॥ दो० ॥ बहुरि मनुष्यहि योनिमें जन्मत भो सहताप। आनयोनि ते रहित भो ब्रह्मबि-चार प्रताप ॥ स्वर्गहु ते तपक्षीण भे पुनर्जन्म जगहोइ। उत्तम कुल आनन्दमय ब्रह्मचार रतसोइ ॥ तब पुनि द्वितिये जन्म में भजन आतमा ठानि। लहै मोक्ष हरिमें मिलै पुनि नहिं जन्मै

आनि (मनउबाच) जोपै ब्रह्माचारमें गहै धर्म संन्यास। तजै गृहस्थी ज्ञान बुध बानप्रस्थ तजि आस॥ तौ पूरण गति योग में प्राप्त होयकी नाहिं। यह समुझावो मोहिं अब सब भ्रम दूरि बिलाहिं (बुद्धिरुबाच) सो उत्तम सबते संन्यासी। ब्रह्मचर्य ते होय उदासी॥ धर्म गृहस्थी अति कठिनाई॥ जन समर्थ कोउ पारहि जाई॥ गेहाश्रम उत्तम सबतेहै। तजै न चतुरस्व-धर्म सनेहै॥ जो गृहमध्य उदासी रहई। धर्म आपनो दृढ़करि गहई॥ जीवन मुक्त ताहि पहिचानै। आनप्रकार न मन अनुमानै॥ योगीयतीमुनी संन्यासी। तपसी ज्ञानवान गुणरासी॥ ऊंच नीच मध्यम सबप्रानी। जन्मत सकल गृहस्थी आनी॥ जे सतसंग सुष्ठु महँ परहीं। सतसंगति प्रभाव भव तरहीं॥ दो०॥ नीचसंग परि नीच मति प्राप्तभये सुनुतात। अंत समय यम चरित ह्वै यमपुर गहि लै जात॥ संगति ते बुध होत हैं संगति ते तपवान। नीच कुकर्मी संगते बरणत बेद पुरान॥ (मनउबाच) प्रथमहिं माया तुम कही अति कराल दुखरूप। निर्णय सोफिरिकैकरौ जोमत राखोगूप (बुद्धिरुबाच)॥ चौ०॥ माया हौं अपार कहिगाई। तामें कुछभ्रम नाहिं गोसांई॥ माया ब्रह्म रहतहै नेरे। सो लखि परत ज्ञान दृढ़हेरे॥ अंतर कतहुं ब्रह्ममाया में। कहि न सकत जिमि बट छायामें॥ अग्निउष्णताद्वैकिमि कहऊं। उष्माअग्नि एक सँग लहऊं॥ घाम दिवाकर दोइ न भाई। ज्ञानचक्षु निरखत भ्रमजाई॥ जहां वृक्ष छाया तहँ होई। छायाबिन न बिटपहै कोई॥ जहँशिखि तहां उष्णता जानिय। उष्मा जहां अग्नि तहँमानिय॥ जहँ तमारितहँ घाम बिशेखी। देखतघाम परत रबिदेखी॥ दो०॥ ब्रह्मतेज मायाअहै यह जानतबुधसर्व। अपरएकगत प्रकटहै बर्णत ज्ञानि अखर्ब॥ चौ०॥रविवतब्रह्म घामवतमाया। यहवृतान्तहौं प्रथमसुनाया॥ घामअन्त नहिंरवि लगुपाइय। योजन लक्षचहौं नभजाइय॥ मिलत दिवाकर घाम नशाई। बरणत प्रज्ञ सुमति चतुराई॥

निरखत घामलखत दिननाथा। बिनदिननाथ नघामसनाथा॥ जबबहु मेघरहैं नभछाई। तबनघाम रविकोउ दिखाई॥ मेघ रूप स्वइयह भ्रमभाई। ज्ञानदृष्टि रोकत तमछाई॥ भ्रमघाज-लदहृदय नभमाहीं। होइन तबहरि सूरलखाहीं॥ मायापार-ब्रह्म अविनाशी। घामपार जिमिरवि गुणराशी॥ दो०॥ जोकउ धावैघामसँग रविमिलाप चितधारि। घामपार बिनरविहि नहिं लहैकहतनिरधारि॥चौ०॥इमि मायाजीते बिन ताता। कोउ न ब्रह्ममण्डलहि जाता॥ मायाबिन नहिं ब्रह्म लखाई। जिमि न घाम बिन सूरज भाई॥ माया मध्य ठाढ़है हरै। देखै ब्रह्मसु-बुध निजनेरै॥ नशतहिं यहमाया गुणखानी। कहत बनतनहिं अकथ कहानी॥ घामनशत नहिंसूरदिखाई। निशाप्रवेश करत बुध भाई॥ तिमिमाया नाशतलय होई। रहै न चहूं खानि महँ कोई॥ ब्रह्मकौन निरखैको जानै। सकल ब्रह्महै ब्रह्मसमानै॥ माया धन्य जगत उपजावनि। निजमारगसों ब्रह्मलखावनि॥ दो०॥ ब्रह्मतेज माया अहै सूरतेज जिमिघाम। माया चीन्हैस-त्यसो लहै ब्रह्म विश्राम (मनउवाच) निर्णयमाया ब्रह्मकोकहो सो समुझो नीक। अक्षर क्षर निर्णय करौ शोधि वेद मतठीक॥ (बुद्धिरुवाच) यह निर्णय यद्यपि कठिन तद्यपि मतिअनुरूप। तोहिं सुनाऊं सथिर ह्वै सुनु इन्द्रिनकेभूप॥ चौ०॥ अक्षरसूक्षम रूपबतावत। क्षरसो थूल विबुधजन गावत॥ ओंकार सोई क्षर कहिये। अमित कटाह जासु कृत लहिये॥ अक्षर सोहं भणतस-याने। योगिराज जपजासु लुभाने॥ सकल भूतके पहिलेजोई। ओंकार पदजानो सोई॥ जोकउ ओंकारलव लावै॥ब्राह्मण सोई चतुर कहावै॥ सोहंमें जो रहत रत कोई। योगिराज कहियतहै सोई॥ सकल शरीर ओंते भयऊ। अरु मनसोहं पद दृढ़गहाऊ॥ कउ कउब्रह्म अक्षरहिकहई। धरि त्यहि ध्यान मुक्तिपद लहई॥ दो०॥अक्षर क्षरते रहित जो सो श्वासा निजजान। ताहीमें सो-हंबसत समुझत चतुर सुजान॥ श्वासा समुझै आपनी करिसोहं

कोध्यान । लहै मुक्ति संदेह बिन गावत चतुर प्रमान ॥ चौ० ॥ जे षट चक्र कहेतिनमाहीं । देखैसकल शोच मिटिजाहीं ॥ योगधारणा बिननहिं सोई । प्रापत होत कहत बुध लोई ॥ प्राणायाम करै नितजोई । कालजीति डोलैजगसोई ॥ जब चाहै तब तजै शरीरा । जरा मरणकी मेटैभीरा ॥ अक्षरध्यान ब्रह्मकरध्याना । कहो तोहिं सिद्धांत महाना ॥ यह बिरले कउजानत भाई । क्षरमाया महँरहे भुलाई ॥ जे अक्षरहिंध्याइ नहिं सकहीं । ते यहि पंथ न कऊबुध तकहीं॥सबतेकठिन सहज सबहीते । मन समुझे समुझे निजहीते॥ दो०॥ब्रह्म निरूपण पुनि करत सुनौ ताहिचितलाइ । भ्रमणा त्यागि बिचारिले आंपु आपुमेंआइ ॥चौ०॥ जासों कहत अरूप अनादी । सोहै ब्रह्मसकल अविपादी ॥ जानब तासु कठिन ऐसोहै । चहब अन्तनभको जैसोहै ॥ निराकार स्वइ अहै अकाशा । तासुमध्यप्रभु करत प्रकाशा ॥ जो कउ चहै खोज त्यहिकेरा । सो निजतनहेरै बुधटेरा ॥ त्रिकुटी उपर बास ताकोहैं ॥ रूपगेह कुछ नहिं जाकोहै ॥ ध्वनि अनहद तहँ सुनिये भाई । निकट गये नहिं परिहिलखाई ॥ गुरुपद ध्यानधरै दिन राती । मथैशरीर सदृढ़करि छाती ॥ जोअष्टांग योगमत भाषो । शनै शनै त्यहिकरि अभिलाषो ॥ दो० ॥ सिद्धिहोत सिद्धांत के समुझि परैगो सोय । त्रिकुटी ऊपर जातमन भ्रमण रहै ना कोय ॥ पांच पचीसौ जेकहे दोष व्यकार अनेक । तेसब मनमोहितोहिसह तहां होइंगे एक ॥ चौ०॥ एकहोतआपुहि पहिंचानै । पुनिभ्रमणा नहिं निज मनआनै ॥ सुनियह सीख बोधमनभयऊ । शरण बुद्धिकी तब त्यहि लयऊ ॥ बुद्धि प्राण मन इन्द्रिय सेती । यकठा भे तजि बिषयी जेती॥ ब्रह्म खोजमहँ एकैरूपा । दुबिधा नशी लहोमत गूपा ॥ जब मन तजो संग विषयनको । तब बुधिमत पंकरो ऋपियनको ॥ समुझोहृदय रूपनिज जोई । कहतबनत नहिं परखोसोई ॥ जेमत जगतअहैं सुनुभाई । ते सबैदेखे चितलाई ॥ एकहि बात सबन महँपाई । नहिं दुबिधा

कछुपरी लखाई ॥ दो० ॥ ताते अब सुनुमीत मन मंगल कहै बुझाय। यहि मततेनहिं अपर कउ बड़ोपरत लखिभाय ॥ जेते मत संसार के वेद सबन शिरमौर। वेद त्यागि औरै कहत ते नहिंपावत ठौर ॥चौ०॥ निजमति सरिस ज्ञान यहकह्यऊं। जस कुछ बुध समाज महँलह्यऊं॥ नहिं बिद्या बल बुधि अतिछोटी। रहै महीन कही सो मोटी॥ चतुर सुजान जगतमहँ जोई। खोरिसुधारि लीजिये सोई ॥ मैं बालक मति हीन जहाना। निर्णय करौं कौनविधि ज्ञाना॥ जैसोहै आकाश निरन्ता। तस यह ज्ञान अहै नहिं अन्ता॥ मेरी मति जिमिमशक प्रमाना। पार नाक दुर्लभ अनुमाना॥ पक्षिराज पण्डितजहँ हारैं। मशक अबुध तहँ कहां बिचारैं। मंगल मतिकी मूढ़ महाना। अगम पन्थ किमि करैबखाना॥ दो०॥ बिवुध सुजान महान जे परभण सुनि हरषाहिँ। तिनसों बिनती करतहौं खोरि दीजिये नाहिँ॥ क्रोधी कुल दोषी अबुध जे यहि मतन प्रवीन। तिनहूंसों बिनती अहै दोषतज्यो लखिदीन॥ चौ०॥ वर्ण अहै क़ायस्थ हमारा। बसत ग्राम सरही सुखसारा॥ राजाराम नाम सुखखानी। तिनकेसुत गणेश बड़ज्ञानी॥ तनय तासु भे नाम बिहारी। जेनिज धर्म पर्म दृढ़धारी॥ बकतीराम तासु सुत भयऊ। जिन निज धर्म नीक करि गह्यऊ॥ तिनकर सुत मैं अबुधमहाना। नाम सुमंगल मोर बखाना॥ सतसंगति फलहै यहभाई। बरण्यों ज्ञानसुमतिजब आई॥ जो कउ चहै बिवुध चतुराई। सो सतसंग करै चितलाई॥ शाहजहांपुर नगर विशाला। जहँ द्वै सरिता वहैंरसाला॥ दो०॥ ताके पूरब दिशि चतुर योजन एक प्रमान। सरही नाम सुग्रामतहँ मंगलको अस्थान॥ बिवुधन सों अरुकबिनसों है बिनती बड़ि मोरि। जानि दास निज कृपाकरि सुमतिसुधार्‍यो खोरि॥ चौ०॥ जे हरिरूप साधु संसारा। जिनके बचनतिहूं पुरसारा॥ तिनके शुभसमाज कहँभाई। जब यहग्रंथ कतहुं चलिजाई॥ तब सब संत जानि निजदासा। खोरिसुधा-

स्यो तजि सब आसा ॥ संतन ते न बड़ो कउ अहई । मत अपार साधूजन गहई ॥ हौं मतिहीन गेह आसक्ता । नहिं साधू नहिं अहौं विरक्ता ॥ तीक्ष्णबुद्धि नहिं विद्या नीकी । केवल भजन भाव मति फीकी ॥ साधु समाज योगहौं नाहीं । भाव भक्ति रस कबितामाहीं ॥ आदर साधु देहिं जब जाही । फलित होइ कबि कबिताताही ॥ दो० ॥ यहि कारण बिनती करौं संतनकी कर जोरि । सोचि सम्हास्यो खोरिलखि सुधरि जाइ मति मोरि ॥ थोरी मति थोरो कहो बहुत अर्थ अनुमानि । चतुर साधु कउ समुझिहैं मूरख सकै न जानि ॥ चौ० ॥ मूरख निंदक बादी जोई । गुरुनिंदक द्विजनिंदक होई ॥ विबुध प्रवीण बिनय मम मानी । यह मत ताहि न दीजोजानी ॥ यह सिद्धांत योगकर भाखो । जानो सो न गुप्तकरि राखो ॥ द्वादशाब्दि लगि खोज्यो येही । प्राप्तभई सुमत्ति तबदेही ॥ पुनिबर्णन पोथीयहकीन्हीं । दुबिधा भ्रमणा सब तजि दीन्हीं ॥ जेनिज प्रीतम चतुरप्रबीना । तिनकहँ यहमत जिमिजल मीना ॥ दीजोसुमति भूलिमतिजाई । यह समुझति मन नाहिं भ्रमाई ॥ तीरथ ब्रत मख फलकी दायक । ज्ञानतरंग अहै सबलायक ॥ दो० ॥ जो कउ समुझैदुचित तजि ज्ञान तरंग प्रवीन । ज्ञानतरंगी होइसो ज्ञानतरंगअक्षीन ॥ जड़ मूरख को यों अहै मंजा जैसेमीन । तिनके आगे मतिपढ़ौ सुनिपैहैं दुखपीन ॥ अथवा नेक न समुझिहैं जड़ताबिवशअचेत । जिमिहरि कह अर्जुन गुणो खड़ेसबै कुरुखेत ॥ गुणी चतुर संसारमें निरगुण गुण खिलवार । तिनको निःसंदेह बुध यह मत सुखद बिचार ॥ कहियो जानि प्रवीण जन बिनयत मंगलदास । ग्रंथ अंत अब होतहै पूरण पदकी आस ॥

इतिश्रीअज्ञानतिमिरसूरप्रकाशज्ञानतरंगमंगलदासबिरचितेमनबुद्धिसंवादे अध्यात्मज्ञानसमाप्तम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ मंगलविनोद सहस्रसाखी लिख्यते ॥

—❋—

दो० ॥ जंगम थावर भूतमय कृत प्रकाश प्रभु जौन ॥ मंगलमन बिज्ञानके प्रथम बंदिये तौन १ पुनि बंदिय ता शक्ति को माया जाकर नाम ॥ सुखदायक ओंकार पद ताकहँ करियप्रणाम २ ॥ इति बंदना ॥ अथ साखी ॥ सकल लोक महँ व्याप्त है जानत सब गुणतासु ॥ तदपि न ध्यावत आतमहिं परिपूरण फल जासु १ पांच तत्त्व गुण तीन जे धरे तीन सुरदेव ॥ जाकी कृपा कटाक्षते ताकी कीजिय सेव२ बिनु मारग सांचा गहे त्यागे बिनु दुबिधाय॥मुक्तिलहै नहिं कोटिबिधि वृथाजन्म शुभजाय३ तजि दुबिधा मन मूढ़ तू भजिले आतम ज्ञान ॥ मोक्ष लहैसंशय नहीं बदत शास्त्र पौरान ४ बिनुध्याये निज जीवके मनन लहै थिर ताहि ॥ थिरता बिनु शांतिहु नहीं बदत सुबुध अवगाहि ५ प्रथम चीन्हि निज रूपको पहिंचानै पुनि आप ॥ यहिसाधन साधक चतुर मिटै सकल संताप ६ जगत रम्यो कज्जलभवन साधु परिक्षाहित ॥ प्रविशि कलंक बिना बहुरि निकरतहोइ सचेत ७ समुझत करणी कठिनयह बुद्धि अधिक भ्रमखाति ॥ किमि कज्जलते दोषगत निकरै सुजन स्वभांति ८ जो कलंक लागै चतुर जल तप धोवै वाहि ॥ पूरबवत पुनि होइ बुध यामहँ संशय नाहिं ९ परम ज्ञानको प्राप्तभे अनुभव करत प्रकाश ॥ अनुभव उपजत मिटत भ्रम नाशत आशापाश १० आशापाशी नशतही तृष्णामोह बिलात ॥ अंत समय तब जीव यह स्वयंब्रह्म ह्वै जात ११ मोक्ष माहिं जोहै दशा सो सुषुप्तिवत जान ॥ सुख दुख सुधि बुधि ज्ञान मन तहां सुएक प्रमान १२ अतिउत्तम सतमार्ग यह अध्यातम बिस्तार ॥ पूरण धीवर बिक्रमी करत

कर्म निरधार १३ संचित पातक नशत सब उपजत अनुभवज्ञान॥
क्रीयमान निःकाम सब होत कहत गुणवान १४ पाप पुण्य
आशा रहित योगी कर्म कमात॥ स्वर्ग नरक मग परिहरत अंत
सुब्रह्म समात १५ फलित कर्म प्रारब्धिवत याभव दुखसुखरूप॥
समजातन सन्तोष मति ध्यावत पुरुष अनूप १६ कोटि भार
हाटक दयो मोक्ष होन हितताह॥ अंत बासना पाप की लैगइ
नरकनिमाह १७ कियेजन्म भरि कर्मखल निंदनीय संसार॥का-
ल समय ध्यायोप्रभुहि पायो स्वर्गबिहार १८ स्वर्गबसै निज सु-
कृत सम जन्म होइ परिणाम॥ जरा मरण नाश्यो नहीं यहिते
स्वर्ग निकाम १९ निरैबास पापी लहत पाप तुल्य सुनुमीत॥
नीच योनि महँ जन्म पुनि बदत बेद यहगीत २० स्वर्ग नरकद्दउ
समभये जन्म मरणके माहिं॥ गर्भ क्लेशनाश्यो नहीं मृत्यु होत
जन्माहिं २१ अध ऊरध जे योनिमें जन्मतजीव अपार॥ शोक
भोग समता बिषय कोधटिबढ़ि संसार २२ जाके ध्याये क्षणक
यक कलिमल संचितजात॥ देहनगर मन भूप तहँपावनसुखहि
दृढ़ात २३ मनइन्द्रिनको भूपहै त्वचा करण चपराक॥ घ्राणादि-
कजानेत नककु बिषयसांस मन काक २४ प्रथम जाहि निज वश
करै परमातमआराधि॥ मिटैसकलचिंता तिमिर ज्ञानसूरनिरुध्या-
धि २५ योगबिना अजपा जपे मनवशआवत नाहिं॥ रागद्वेष त्यागे
बिना मन न बसैमनमाहिं २६ दृढ़ बुधिज्ञानपसारिके मनशिक्षा
देत्यागि॥ गुह्यस्थल अनुभवउदय जायभ्रांतिरसपागि २७ अंधकूप
पर अंधजिमि कहूं दिखायोदीप॥ पंथ न हेरो मूढ़मति जबलगि
गो न समीप २८ जिमि पिपील मिष्टान में लपटी आशापास॥
मुक्तनहिं अतिबल करत तथा बिषय दृढ़बास २९ अन्नाशापक्षी
यथा परयो बधिकके जाल॥ तिमि प्राणीभोगाश करि मायाबश
त्रैकाल ३० निद्रा क्षुधा तृषादि जे मैथुनादिकृतवान॥ नर पक्षी
पशु कीउहू जानतसो मतिमान ३१ जड़तावश वृक्षादि जे रहेथिर-
त्वाहिपाय॥ मनुजपाय चैतन्यता तापदवीलौजाय ३२ सिद्धांतन

को अन्तमें प्रापकसोक्रियकार ॥ निजवश जीवन मरणहै जन्मत किमिसंसार ३३ मानामान निरादरौ आदर समता भाव ॥ शुचि बासनआसन कुरुचिसुरुचिसी एकस्वभाव ३४ ईर्षा जगकीतीन तजि षटऊर्मी अपनाय ॥ दोष शोकभय सब तजै अंतब्रह्मपद पाय ३५ जन्म मरण निर्द्वंदतजि जीवईश ह्वै जाय ॥ कर्माकर्म दुवौनशैं आपुहि आपु नशाय ३६ अहंभावना परिहरै युक्तबन्ध कउनाहिं ॥ अकल अमेय अनीहअज निज उरध्यावै ताहि ३७ अंकअंक संघातकरि सिद्धि प्रथम हरुअंक ॥ शेषवस्तु अनसिद्धि जो सोईरहत निशंक ३८ ऐसो पुरुष असिद्धि जो ताजातन के हेत ॥ सतमारग ध्यांवत नहीं साधत कर्म सुखेत ३९ मेघसुधा बरषै बिवुध कदलीफल नै दुबार ॥ तथा मोक्षपद पायकिमि कर्म न भव संसार ४० अकर कर्यो संसार यह रचि त्रैचरभव जीव ॥ क्षीण बृद्धि प्रापकनहीं भयो धर्मकी सीव ४१ सिन्धुप्रसादहि पायजिमि होत मेघपय खानि ॥ तथा ब्रह्मते जीवसब को पूरणता हानि ४२ अरु जिमि सरिता जगतकी मिलि न बढ़त जलराशि ॥ तिमि देहीमिलि ब्रह्मनहिं बढ़त परत बुध भासि ४३ जाने बिन तारूपके रूप न पावत जानि ॥ बूझतही निरवाणपद होतगुणनकी खानि ४४ को निरगुण सरगुणकहा दुबिधा भ्रमणा भूल ॥ निगुण आप मायासगुण यहै ज्ञानको मूल ४५ आवत जानत लखिपरत जीव अकर्त्ताकार ॥ अलख यहै नहिं दूसरा लखुकरि ज्ञानबिचार ४६ ज्ञानमूल सतसंगहै समुझिपरत करतार ॥ अव्ययअज अविनाश प्रभु जासु अंश अरतार ४७ ज्ञानी जो कर्मनिकरै तजै सो फलको काम ॥ अज्ञानी फल आश करि लहत अंत फलबाम ४८ ज्ञानवान को कर्म कउ सिद्धक बंधक नाहिं ॥ जगत धर्म दृढ़ता लहै करत हेत यहि आहिं ४९ कर्म सकल धार्मिकनके करै जगतहित लागि ॥ सो ज्ञानी संसारमें रहै अमीरस पागि ५० यजत देवकरि लालसा देवतपस फलदेत ॥ याही जगमें दुःखसुख पुनिप्राणीगहि

लेत ५१ आपनपौ भूलेफिरत तिमिर अज्ञउरछाय ॥ ज्ञानदीप उदयत नहीं तजत न दुविधा भाय ५२ जित जित जीवाशा विवश जन्मत त्रैचर माहिं ॥ कर्मलिंग तन सँग रहत यामहँ संशयनाहिं ५३ तृष्णा कृष्णा रातिसम ज्ञानप्रकाश विहीन॥ सत्य वस्तु बुधि चशनसों लखिकिमि सकत प्रवीन ५४ चतुर्चरण पूरणहिये बाहिर मूढ़समान ॥ डोलत मोहअनी रहत सबको लखत प्रमान ५५ ऊपरसे कछु काजनहिं अंतर प्रेमप्रकाश॥इंद्रिय निग्रह शुद्धमति करत अविद्यानाश ५६ संसारी ध्यारीदशा सब हिनको जोसार ॥ सोजानब अतिकठिन बुध जानत वृद्धसिंगार ५७ आतम भेव भुलायके भये योगमें लीन ॥ सो पूरण पावत नहीं अंतस्थान मलीन ५८ गुरूवाक्य पूरणबद्यो ओंकार अनमोल ॥ खोजत तापद को न दृढ़ को ब्राह्मण को कोल५९ब्राह्मणकी पदवी अधिक चतुराश्रमके माहिं ॥ बिनाधर्म ब्राह्मण्यके ब्राह्मण पदवीनाहिं ६० हंसवर्ण ब्राह्मण्यको वेदवाक्य परमान॥ ज्ञानमुकुट बाँधेबिना सो नहिं होत सुजान ६१ राग रहित छवि शोभिजै दृष्टिप्रेम पदलीन ॥ हंस बरण नर नारिकृत सुष्टुकर्म छलक्षीन ६२ तत्त्व दरश पावत मिटत मोह क्रोध मद काम ॥ आतमहा होवत नहीं साधक बुद्धि ललाम ६३ भावशुद्ध प्रथमैं करै चिदानंद सिद्धांत ॥ साधारण दुर्बुद्धिबिनु सेवत त्रैपुर कांत ६४ आतममें जेलिप्तहैं अंतर एकहि भाव॥ तेपूरुष जीवत मुक्त धारे सत्य स्वभाव ६५ जानत आतम भावको पहिचानत निरवान ॥ तापदके संयोगते रहत न जीव प्रमान ६६ अन्नभस्योहि कीटिमन काहू मंदिर बीच ॥ एक निष्क लखि परखिगो भ्रम नहिंरहा नगीच ६७ ब्रह्मक्रांति यह आतमा बदत वेद वेदान्त ॥ चीन्हे निज आतम चतुर लहै ब्रह्म सिद्धान्त६८ सांभरिहीन सुढेरुहै अद्रिमान धीमान ॥ निज स्वारस्थसों आइहै बुधव्यंजनपरमान ६९ शालग्राम शिलालिये प्राण प्रतिष्ठा कीन्ह ॥ वैष्णव सांचेभावसों तापूजन मनदीन्ह७० सो पषाण सर्वांगहै निष्ठाशुद्ध

प्रताप ॥ स्वर्गवास दायक भयो अंत बिवर्जित ताप ७१ सुख-
दाता निर्ज्जीवभो जीव मुक्तिको दानि ॥ जनक कहो शुकदेवसों
यहबुध धर्म बखानि ७२ श्रीराधापति अर्जुनै कीन्हज्ञान उपदेश॥
आतम पूजा कर्म बहु जो निःकाम निदेश ७३ तत्त्ववस्तु आतम
कहो क्षर अक्षर विस्तारि ॥ लिंग थूल बपु तत्त्व मिति बुधजन
लेहिं बिचारि ७४ चतुर्बाहु त्रैचष चतुर वदन न मायाईश ॥ ये
पूरण आयुषलहे तजत नपुष बिसबीस ७५ जन्मभयो ओंकार
ते बदत वायु पौरान ॥ जन्मजासुको मृत्युत्यहि यहबुध विदित
प्रमान ७६ पुनि वशिष्ठ पूंछ्याजबै शंकरसों यहभेव ॥ भाषो तूही
देववतहों नहिं पूरणदेव ७७ ब्रह्म अन्यहीं आनहीं देखु सामश्रु-
तिजाय। तत्त्वं असि वर्णन कस्यो त्रिविधि जीव दुबिधाय ७८
अकल निरीह निबंध बिनु निर्मलब्रह्म सुभाति ॥ जाइच्छाते देव
नर त्रिपुर बिभूति दिखाति ७९ चिदानंद पूजो चितहि बुद्धिआ-
सुरी त्यागि ॥ शुद्धभाव ध्यावो बिबुध निज आतम मतिपागि ८०
पावनपद पावत चतुर आतम ज्ञान प्रताप ॥ आनभांति युगचारि
लगि नशत न जन्म सँताप ८१ योग मार्ग अष्टांगहै साधक तीनि
प्रकार ॥ काव्यभाव खोजत फिरत कर्मन रहित पसार ८२ यक-
टक निरखै नासिका नासा ध्यान लगाय ॥ अभ्र पात परमाणबुध
रहै अमीरस पाय ८३ नित्यक्रिया साधन करै देह अनित्य विचा-
रि ॥ आतम घातीहोइ नहिं स्वयंब्रह्म उरधारि ८४ ब्रह्माविष्णु
महेशजो कर्त्ता पालकहारि ॥ तेसमाधिकरि ब्रह्मको ध्यावतकोनर
नारि ८५ युगानंत जा क्षणकनहिं जासु न आयु प्रमान ॥ ज्योति
निरंजन ब्रह्महै सदा स्वतंत्र सुजान ८६ भयो स्वतंत्र न वदिस-
कत वेद भेदको तात ॥ अलख अगोचर ब्रह्म बुध भ्रम विनुबुद्धि
समात ८७ माया जासु अपारहै पार लहत नहिं कोइ ॥ प्रथमैं
माया भेद लखु पाछे आतम सोइ ८८ ब्रत तीरथ अर्चादि जे
ते न मुक्तिपद दानि ॥ स्वर्गादिक दायक अहैं दृढ़ता मूलबखानि
८९ ज्ञानदीप उर गृहधरै मोह तिमिर बहिजाय ॥ सार बस्तु

निज खोजिले क्यों फिरि आवै जाय ६० निरगुण मत सरगुण सुमत आतम ज्ञान प्रधान ॥ आतम बिनु जाने बिबुध मोक्ष न तीनि समान ६१ सांख्य यजत योगहि करत मोक्ष हेतु सज्ञान ॥ मोक्षपरे सुख अपर नहिं भोग योग कल्यान ६२ मनुज योनि सब योनिमें उत्तम मोक्ष सुपान ॥ याहित्यागि पुनि कोटि विधि लहै न पद निरबान ६३ आपु आपुको भूलियो पदवी पूरणरूप ॥ क्यों चीन्हे माया बिवश प्रकट न ज्ञान अनूप ६४ समता दृष्टि सुचेत बुधि मन बेगता मिटाय ॥ पद आपन तापन बिना कस न चीन्हु मुदपाय ६५ शील क्षमा दाया धरै परउपकार सुकाज ॥ उचित गृहस्थी धर्म यह अतिथि तोष शुभ साज ६६ ब्रह्माचार बिचार युत निराचार निर्द्वन्द ॥ ध्यावत धर्म निरंतरै पुरुष पुराण स्वछन्द ६७ मन शिक्षा मम मानि नित तीरथ उरमें न्हाय ॥ सत्यहि ज्ञान प्रतापते आशु मुक्तह्वै जाय ६८ जो न त्यागिहै व्यंगता तौ न पाइहै मोष ॥ मोक्षबिना उतपति मरण लगारहहि नहिं तोष ६९ मंगल मनको बोध कृत महा मोद उर आनि ॥ शिक्षा पद निर्बाणकी प्रथमहिं स्वर्गबखानि १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्तायांमंगलबिनोदकायां मंगलदासबिरचितायां निर्बाणपदवर्णनोनामप्रथमशतकः १ ॥

———०———

दो० ॥ परिपूरण धर्मज्ञता परिपूरण विज्ञान ॥ परिपूरण कल्याण मय पारब्रह्म शुभ ध्यान १ ब्राह्मण होवै ब्रह्मविद समदर्शी शुचि साधु ॥ तजि त्रिदोष निज आतमा निज जोवै आराधु २ एक लोकहै भूपहैं सगुणसार निष्काम ॥ समता दोनों क्यों लहैं लाभ हानिदा बाम ३ अखिल लोक आशा बंध्यो सुनिले उत्तम ज्ञान ॥ याहि निवारै शुद्ध मति शांति स्वरूप सुजान ४ उत्तम मति देखतफिरैं कर्म बिकर्म समाज ॥ निज मन करतल निज किये यथा रंक तिमिराज ५ तीनि तीनिमें तीनिधरि कला अंश को आहि ॥ पूरण पुरुष अनादिको आदि अंत बुध नाहि ६ काम

बासना बाम मग जीव चलत अनचेत ॥ नरकबासना जीवको अंतकचर बुध देत ७ क्रोध संग अदया रहत हिंसकतासों नेह ॥ हिंसादायक अधोगति मूढ़धर्म न सँदेह ८ मदमदता संग्रहकिये नीचऊंच नहिंजान ॥ अहंभावदानिरयपद बदत गूढ़विज्ञान ९ लोभसंग बसलालसा होतसो पूरणनाहिं ॥ जीवनध्यावत आतमा अन्तबसत अधमाहिं १० मोहमहा बर्जितकरत सतमारगसे धीर ॥ ताबश नित्यानन्द जो जीवसो होतअधीर ११ येपांचों बटपारहैं सतमारगके तात ॥ तूप्रथमै इनतेबचै कहुभूपति सों बात १२ रक्षकयाको आपतट सुन्दररूप बिराग ॥ भट विवेक सन्तोषअरु क्षमादया अनुराग १३ जोशरीरधारी त्रिपुर सो श-रीर बिनुहोइ ॥ संशययामें बुधकहा ध्याउब्रह्म पदसोइ १४ जो नभयो उत्पन्नहै अरुनमरैगोअन्त॥ वाकीसुधिको कोकहै अहैनि-रादि निरन्त १५ निकरयोनि चहुँखानिमें आपहिरहा समाय ॥ कोद्वितीय ज्ञानीबदत पैनाहीं दरशाय १६ पूषणकर संयोगघन बिन्दुधनुष बहुरंग ॥ उपजततिमि मायीशसों भयेजीव चहुँसं-ग १७ धनुनरंग द्वौझूठहैं घनमाया नशिजात ॥ भानुउदयपूरण सदा तथा न ईशपपात १८ कालपाय नाशतनहीं जन्मतहू न स्वतंत्र ॥ क्योंजानै निजछन्दको बांधेमायायंत्र १९ इच्छाजाके तसकी ब्रह्मसौख्य पदमाहि ॥ सोचीन्है निज आतमा तासुअंग सोआहि २० कमलबसत जलमध्यजिमिपातमिलित पयहोत ॥ भेदत कैसहु ताहि नहिं भीतर बाहिरपोत २१ चञ्चरीक योजन बहुत आवत काज सुगन्धि ॥ प्रीति सत्य त्यागतनहीं जातरैनि तहँबन्धि २२ जलचर जीव अपार जल बसत मीन अहि भेक ॥ भेद न जानत गन्धिको क्योंकर करैं विवेक २३ लोकरीति ज्ञानी करत धर्मरहै जगछाय ॥ तिनहिं न बांधत कर्मते जेनिःकर्म स-दाय २४ ज्योतिनिरीह अमानहै देखिपरत परिपूर ॥ ज्ञानीचारों दिशि लखत देखि सकत नहिंकूर २५ को स्वारथहै दीपको धारे कज्जल शीश ॥ टेकगही जगहेतुहित तैसेकर्मऋषीश२६ मारगमें

रज रजत जिमि रहत निरादरनित्त ॥ सतसंगतिपवमानकी ऊं-
ची चढ़ै अमित्त २७ को कविता जानत सुजन जो सविता न
प्रकाश ॥ निरालंब निरधार मग चलतसदा दशआश२८ दुबिधा
दोहाअर्थकी ज्ञानबिना न नशाय ॥ सज्ञानी दुबिधा रहित कहत
ज्ञानगुण हाय २९ महापुरुष सोआपहै महत्तेजबहुभान ॥ महा-
शक्ति इच्छा कहत शब्दश्रों परमान ३० तजै शुभाशुभ बासना
रहै एककेपास ॥ द्वैतभाव बिनु जानिहै शुद्ध चितानँद भास ३१
कर्मप्रधानी जगत यह कर्म न त्यागै बुद्ध ॥ जासु कर्मलखि म-
नुज जग गहैं सकल मगशुद्ध ३२ अखिल धर्मखोजै प्रथम तजि
हठमत मतिमान ॥ सत्यगहै तजिमूल भव ताहि कहत बिज्ञान
३३ निज धर्मन त्यागै नहीं जोश्रुतिवत कृतकर्म ॥ आनमनुज
ज्ञातिज सकल गहैं सत्य निज धर्म ३४ बड़ेकर्म कर्ताभयेनामी
कामीनाहिं ॥ फलकी तृष्णा चित्त नहिं ते ज्ञानी भवमाहिं ३५
सतमारग वेदांतको ताहि निबाहै कोइ ॥ बंधनात संसारतेमो-
चिजाय नर सोइ ३६ जीवन मूल स्वश्वासहै वृथा नहीं है तौ-
न ॥ को जानै सिद्धांत नित बदत सत्यहै जौन ३७ गमनहोत
अक्षर सुभग प्रविशे पूरण बानि ॥ यहजानै जोजीव तौ पहिंचानै
अनुमानि ३८ जन्मसकल अर्चाकरी मूरतिमयी सुदेव ॥ स्वर्ग
भोग फल तासु भो रहा मुक्तिको भेव ३९ तीरथ ध्याये आयु
भरि अन्तबसे सुरलोक ॥ मोक्ष पदारथ हाथ नहिं आयो भेन
बिशोक ४० बिष्णु शंभुहित ब्रतकिये रबिब्रत साधि अपार ॥
दृढ़भावशफललोकदा मोक्षन भो करतार ४१ काठ्य बनायेज-
न्मभरि देव पक्षबहुभांति ॥ देवलोकभो अंतमें मोक्षनहीं दरशा-
ति ४२ अतिथितोष नितप्रतिकरै दयायुक्तनिरदोष ॥ आराधै
निज आतमा अंत सुपावै मोष ४३ प्रीतिसत्यप्रतिपालिये निर-
गुणमत उरधारि ॥ वेद वाक्यसत्यांत सो जाय जन्म निरवारि
४४ चौरासी लख योनिमहँ चारिखानिके जीव ॥ तू भरमै सब
मेंसदा कहां मुक्तिकी सींव ४५ उदय भोनिज कर्मबश बदतवेद

विज्ञान ॥ स्वर्ग नरक कर्तव्यवत होत मोक्षधीमान ४६ ज्ञानबिना बूझत नहीं पूरण पदको भाव ॥ बूझेबिनु सूझत नहीं मोक्ष होनको दांव ४७ जगत प्रीतिमहँ बँधिगयो जीव ब्रह्मकोअंश ॥ कठिनमुक्ति सतसंग बिनु पढ़त नहीं हरिबंश ४८ नित प्रतिकरत पुकार यह हौं परमातम आपु ॥ मानत नहिं शिक्षा बिना कृत शिपरीत अलापु ४६ राम राम ध्यावत सदा मर्म नामको आन ॥ सोजाने बिनु स्वर्गमग जात कहत बुधिमान ५० नाम भेद उर आनिकै जपै सदा चितलाय ॥ पूरण ज्ञान प्रताप सों आप मोक्ष ह्वै जाय ५१ जीव खोज मिटिजाय जब होइ ब्रह्मपद लीन ॥ जन्म मरणके दण्डते मोचि जायसुप्रवीन ५२ कहै भेद नहिं काहु प्रति लीनरहै सबमाहिं ॥ आतमही को ध्यान उर मुक्तहोइ भ्रम नाहिं ५३ निःस्प्रेही जगतण लखत सर्वासार प्रभुत्व ॥ लीनरहत निज आतमा प्रकटत अमी मृदुत्व ५४ जिमिविरक्त बामन लखत दाताधनन म्वहात ॥ तिमिज्ञानीत्रैलोकनको लखिनिज माहिं समात ५५ कर्म शुभाशुभबंधहै जबलगिफलसों हेत ॥ निरफल कीन्हे कर्म सब अंतमुक्ति लहि लेत ५६ संभव काको नामहै अनुभवकोसंसार ॥ जन्म मोक्षद्वौजातिये यहसर्वांग विचार ५७ यमआसन औनियम कृतप्राणायाम प्रवीन ॥ प्रत्याहार सुधारणा ध्यानसमाधि अक्षीन ५८ यहअष्टांगयोगहठ सिद्धियोग विज्ञान ॥ जाकेउपजत चित्तमें जात अविद्यामान ५६ मायासांपिनि सर्वदा डसेजीव सबधाय ॥ बिन गाडुरि विज्ञानगुरु कोजगसकत जिवाय ६० मालबिना मिलि जातहै वस्तुअमोल पुरान ॥ यादेहीके भेदमें कृत निर्बैत महान ६१ परमहंसपद पायमन बस्योहृदय महँआय ॥ अतिअवरजको प्रश्नयह दुविधाकथीन जाय ६२ संन्यासी मतिमानजे त्यागेभवकी भूल ॥ लिप्तजगत नहिंहोतते महेज्ञानतरूमूल ६३ मारगपंथी भ्रमिगयो निजमति भ्रमसे तात ॥ जबलगि मगदर्शनमिलै तबलगि मनभरमात ६४ सत्यसिंधु सर्वज्ञशुचि पार-

ब्रह्म सदभाव ॥ दोषशोकते रहितहै पूरित त्रिपुर प्रभाव ६५ ज्ञानिनके तनप्राणको भेदतकाम प्रसून ॥ बैनधाव घातकलगत जिमिनव कीन्हेदून ६६ लोभक्रोध आवतहृदय करत निशादर तास ॥ सद्भावी संसारमें मनदृढ़कृत निजरास ६७ समदर्शी बिज्ञानमय परमहंस सुखरूप ॥ कीटब्रह्म समकरि लखत व्यावततत्त्व अनूप ६८ कियेतीनगुणमयत्रिपुर तीनदेवपरधान ॥ अहंकार में अंतते नाशमिलत विज्ञान ६९ पंचतत्त्वमय जीव सब देहधरेतिहुँधाम ॥ नाशवान ये सकलहैं तूभजु आतम राम ७० कल्याणीतिहुँकालमेंसंतप्रतिष्ठादानि ॥ सगुणअगुण सभंगमत करतसंत अनुमानि ७१ तपसाबुनपद जन्ममलि पाप मैल हरिलेत ॥ धोयभांति जलस्वच्छपुनि सकल भांति करिदेत ७२ संतमंडली बोधद्रा सतमारग सोपान ॥ सेइयज्ञानी कपटतजि पाइयपद निर्बान ७३ इन्द्रीबिनु जीतेकबौं द्रवत न अनुभव वस्त ॥ श्रद्धाकारण भावशुभ जायकज्ञान समस्त ७४ जीतिय इन्द्री आपनी निजबश मनचललाय ॥ परमातम निज आतमा भजिये चित्तलगाय ७५ अजिती ब्रह्मज्ञानरत पावतकष्टअलेख ॥ तत्त्वलहत नहिंकोटि बिधि कृतबहु कर्मबिशेख ७६ कर्मसाधना करिगह्यो ब्रह्मज्ञानसुपन्थ ॥ मनबश भोनेन्द्रिय सकल धार्मिक नानाग्रन्थ ७७ एकपरन्तु बिशेषता ब्रह्मज्ञानकी आहि ॥ अन्त नरकनिबसतनहीं अजितो स्वर्गबसाहि ७८ पुण्यवान धनवान शुचि सुकुलसुबुधि सुबिचार ॥ ब्रह्मज्ञानी भ्रष्टतप ऊरधतप अवतार ७९ ब्रह्मज्ञान समानतप जपक्रिया कउनाहिं ॥ मोक्षदान घननीरसम व्यापक सबथरमाहिं ८० विष्णुभक्तिसांचीकरै पूरुष वैष्णवकोइ ॥ तीनजन्म के योगसों मुक्ति लहैगासोइ ८१ निन्दादूसरि धर्मकी करतवैष्णव जौन ॥ सोतो कोटिहु जन्मलगि मोक्षैं होत कबौन ८२ भक्तिभ्रष्ट नरकैलहै स्वर्गबासदृढ़भक्ति॥ सकलवैष्णव धर्मको सारभाव शुभशक्ति ८३ बिश्व बिष्णुमय जानिकै भक्तिसदृढ़ता साथ ॥ करतवैष्णव रैनिदिन तेबुध होत

सनाथ ८४ येवीहूयाबिधि करै भक्ति उपासक जौन ॥ सत्यभाव भवतेतरै जन्मएक द्वै तौन ८५ ब्रह्मज्ञान सुअग्नि है जराजन्म तृणरूप ॥ भस्मतनिकटहि जातही यह सिद्धांत अनूप ८६ कोटिएक महँमनुज कउ उरधारत विज्ञान ॥ अनुभव दर्शन ब्रह्म लव आतम तत्त्वसुजान ८७ धिषणादृढ़ करिआपनी कमठ तुल्यगोखींचि ॥ निजआतमको उद्धरै लखैन गति कविनीचि ८८ पवनसंधिमें पातपरि आपहि चढ़तअकाश ॥ ब्रह्मज्ञान तहँ जीव परि ऊरधकरतप्रकाश ८९ आशभरोसबिहाय जग ब्रह्मज्ञानबिचारु ॥ उदासीन पथलेइकै निज जन्मांतनिवारु ९० घटघटब्रह्म अव्यक्तहै अव्ययप्रकट लखात ॥ ब्रह्मज्ञानसुदृष्टिमग दुष्ट प्रकृति नहिंतात ९१ जाकेइच्छा मोक्षकी सोयहकरै उपाय ॥ गृहकाननसमताधरै मानसनेह बिहाय ९२ कोटि जन्मबन बसिमरै अजिती श्रद्धाहीन॥ आवागमन नपरिहरै यह सिद्धांत अक्षीन ९३ बालकबामा बंधुसुत बसैभवन मतिधीर ॥ उदासीन अन्तरभजै आतम मुक्तितथीर ९४ जाकीमाया अति प्रबल बिरचै चौदह धाम ॥ सो आतम तन ब्रह्मबिद योगगम्य परिणाम ९५ समुझत बनतअनेकबिधि कहतबनतनहिँसोइ ॥ ब्रह्मज्ञान परसादते गुरुमुखबूझै कोइ ९६ यथा भामिनी भोग सुख कैसे सकै बताय ॥ करवाये बिनु कर्म सों यों समुझै चितचाय ९७ सोवतमें जोहै दशा ताहि बतावन काज ॥ कोसहाय करि सकत बुध सोयो बुद्धिसमाज ९८ मोक्षदशाकोसौख्ययह जानियप्रकटन तात ॥ बहिकारण कउ कोटि महँ यामगमहँ ठहरात ९९ मंगल सांचाआतमा जग असत्य साभांति ॥ सतसंगति जोनित करत सेइयताकीपांति १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायां सर्वांगसुबुद्धिकर्तायांमंगलबिनोदकायां मंगलदासविरचितायांनिर्वाणपदवर्णनो नामद्वितीयश्शतकः २॥

दो० ॥ जोपै ब्रह्मज्ञानमें बुधि न लगैभरि पूरि ॥ तौ पुनि

भक्ति सुसत्य करि गहै ज्ञानकी मूरि १ सत्य सनेह लगाइकरि ध्यावै श्रीभगवान ॥ आदिअंत यकरसरहै लहै परम बिज्ञान २ भक्तहोइ सद्भाविका छलहठ त्यागी सत्य ॥ अंत विष्णुपुरबास लहि मेटै भव आपत्य ३ आन ओर हेरै नहीं प्रीतम सांचात्यागि ॥ पूरणभये निबाहके रहै तासुतट लागि ४ वाणी परिहंरि कपटकी दंभ भावना हीन ॥ आराधै शारंगधर होइ न यमदुख दीन ५ किंकर लौंजोभावहै सोमन राखैनित्त ॥ अहंकार ममता तजै सबदिन बित्ताबित्त ६ मित्रमानि सबनेह तजि वाही सों करु नेह ॥ अंतप्रीति वश बासना लैजैहै वा गेह ७ जाकोरूपअदृश्यहै दृश्यमान किमि होइ ॥ सत्य प्रीतिकी रीति यह अपनावै त्वहिं सोइ ८ प्रीति प्रतीति स्वचित्त धरि ध्यावै शारँगपानि ॥ मुक्तिपदारथ करलगै योंकवि कहत बखानि ९ करै प्रीति हठ भावसों तजै न कोटि कलेश ॥ नारायणकी कृपाते बसैसो वाहीदेश १० बिघ्न भयंकर देखिमग तजै न कर असि प्रीति ॥ मारिचलै निज प्रेमपथ यहै मित्रकी रीति ११ ऊपर ते हितकी बदत अंतर आन बिचार ॥ सत्य प्रीति भासीन उर कौननिबाहन हार १२ मंगल प्रियतम सत्य जो गहै टेक सतभाय ॥ आदिअंत यक भाव सों ताहि मित्र दरशाय १३ मंगल कदलीवृक्ष ज्यों हठ तजि फलन दुबार ॥ सत्यप्रतीत्यों साधुजन नाहिंधरत अवतार १४ सहस कोटिभय पंथमें मृगबन सुन्यो अलापु ॥ प्रीति बिवश आवत भयो प्रण बश नहिं संतापु १५ अहि सुनि बाणी वेणुकी निकस्यो भवन बिहाय ॥ यदपि गह्यो अहिबधिक त्यहि दयै दण्ड समुदाय १६ दशन भंजिकिय बंध त्यहि बहुरि बजायो बेनु ॥ सुनैलग्योसानन्दही प्रीतम बाणि सुखेनु १७कालकाल का करि सकत पूरणपुरुष अनूप॥ तासु प्रीतिते अभय मन पावैगो निजरूप १८ तन ते पूजत देवता मनते बिषयी ध्यान ॥ प्रीतिसत्य लावत नहीं क्योंहोवै कल्यान १९ एकादशी ब्रतेरहे नारायण ब्रतजानि ॥ उरआशा भव भोगकी क्यों

होवै फल दानि २० जगन्नाथकी जातभे मन त्रिय तनयसनेह ॥ मन बिराग आयो नहीं क्यों बसिहै सुरगेह २१ कंकर सेजब-नाइ नित सोवत दुखित शरीर ॥ लाभ लालसा उरबसै क्यों मिटिहै भव भीर २२ अग्निचारि दिशि ज्वलित मधि बैठितप-तनित दण्ड ॥ भक्तिभावमन शुद्धनहिं क्योंसुखहोइ अखण्ड२३ बिनुन्हाये जल पाननहिं बिनुशिल भोगन भोग ॥ तृषा क्षुधाउर बासिनी कहामुक्ति संयोग २४ कोमलबचन मयूरवत निर्णय ज्ञान अनेक ॥ काम लोभ अंतर बसै कस यह भक्ति बिबेक२५ ग्रीषमकेश अज जोरिकै भूतिमर्दि निज अंग ॥ मौन गहे मगबा-सिनित निंदहि तीरथ गंग २६ आप बड़ाई नित चहत निंदत आन सुजान ॥ आशा बासी अजित मन कहांमोह कल्यान २७ बहुत अहारी भक्तनहिं निराहार नहिं संत ॥ सत्य प्रेमको मग गहे सुख समाज त्यहिअंत २८ जानत आनन आपसम शुचिके मारगमाहिं ॥ अहंभाव दुख दानि भव अंतहु संशय नाहिं २९ प्रीति रज्जु महँ बांधि मन सतमग देहचलाय ॥ ज्यों नटवाशा-खामृगहि जहां चलै लैजाय ३० कामी सेवत नारि ज्यों आन प्रीतिकोत्यागि ॥ तूमंगलमन तौनविधि रहुप्रीतम रसपागि ३१ दीनबस्तु बिनशिशिरमहँ ज्योंदिनकरहि निहार ॥ त्योंमंगलमन तूकरै पूरणप्रीति बिचार ३२ मनते तनते वचनते क्रियाकर्मधन बाम ॥ सबबिधिसेवै मीतपग जगसुख पुनिहरिधाम ३३ कोपं-डित कबिकौनहै कोज्ञानी गुणरूप ॥ प्रीतिबिना निज नाथकी पतिबिन नारिअनूप ३४ भूपप्रतापी प्रीतिभव चाहत सबजग लोग ॥ छिन्नबिभव पुनिताहिसब कहत महीपअयोग ३५ सकल जगत स्वारथमयी बिनस्वारथहितुहोइ ॥ मंगलमत संसारमहँ ने-हनिबाहत सोइ ३६ मृगबधि बधिकस्वहेतुशिर मृतक चलो ध-सितात ॥ मूरख बनबासी कहैं मनुजभीम मृगजात ३७ को कराल को सुगम को शुद्धि समारक कौन ॥ सत्यनेह आरंभभर उरसोवैबुधतौन ३८ जो सांचामारग बदत ताहि कहतहैं दंभ ॥

पूजत छलमय देवता कीन्हो कपटारंभ ३६ जबलगि आशाभो-
गकी तबलगि मोक्षन होत ॥ आशमिटे भवकाम की अनुभव
करत उदोत ४० मातपिता तियसुत सखा तजिकैबनेभिखारि॥
गृहगृहमान गमाइयो क्योंमीचैं अविचारि ४१ कर्माक्षरलोपत
नहीं कोटिउपाय प्रवीन ॥ आतमएक बिचारबिन जन्म जन्म
दुखपीन ४२ ज्योंस्वपने महँदीननर नरपति पदवीपाय ॥ जा-
गेरंचक सुखविवुध तथाजगतको भाय ४३ चारिपांच गुणबीचमें
बिबिधजन्म तूलेइ ॥ विषयबासना प्रबलमन अमितदंड त्वहिं
देइ ४४ मायाब्रह्म अपारह्वौ आतपपूषणदेव ॥ आतप मित्र बि-
हीननहिं यहैद्विपदकोभेव ४५ दानदिये धनलाभहै तृष्णावृद्धक
तात ॥ ज्ञानदीप प्रचरितनहीं ब्योपारीकी बात ४६ देशभेदको
जानिमन बणिकभार भरिबस्त ॥ बेचयोदूने दामलगि तैसेदाम
समस्त ४७ नरमेधावी कर्मकृत लाभहानि तजिदोइ ॥ पापपु-
ण्यआघातजे लहत मुक्तिपदसोइ ४८ गुरुसों पूंछ्यो सत्यव्रत
कहइन्द्री निजसाधु ॥ पूजनसांचे देवको आतमही आराधु ४६
मूरखजड़लौं ह्वै रहे जानतज्ञानन भक्ति ॥ नाममनुष्यनिवासिहै
अंतनरकबिनुशक्ति ५० ज्योंसूत्रक निजउदरते तंतुसमूहबनाय॥
अधऊरध आधारसों जातअंत पुनिखाय ५१ ऐसे निजवश राखि
कै गोसमस्त मनयुक्त ॥ बाहरभीतर कर्मकृत जीवत सोनरमु-
क्त ५२ कमठआप इन्द्रीसकल स्वबशपसारत वीर ॥ पुनिकर्षत
निजअंगमें तथाशांत मतिधीर ५३ खोजाचाहै ब्रह्मपद अनुभ-
वकोशुभदेश ॥ तौलतमारग चित्तधरु सुनिसतगुरु उपदेश ५४
बिनसिद्धांतक कर्मके सेयेबिनुगुणपाय ॥ मुक्तहोइ मंगल नहीं
जन्मअनंत भ्रमाय ५५ जानतआतम अगमअति जानेआप न-
शाय ॥ यथादुग्ध घटबिंदुजल मिलतनरंगलखाय ५६ तीनलोक
व्यापकबिरुज देखतसबकेकाज ॥ गुप्तप्रकट सबठाम प्रभु भजु
किनमन निर्ब्याज ५७ नारिपुरुष कहिसकत को अलख अदृश्य
अकाय ॥ ज्ञानदृष्टिबूझत यदपि को बुधसकत बताय ५८ उपमा

ताकी कौनहै जौन बिलोकोदेव ॥ अकल अभेद अद्वैतको क्यों
करिभाषै भेव ५९ ज्ञानसूर उदयत हृदय बुद्धिनयन सों देखु ॥
पूर्ण ज्योति अविनाश सो पूरण शब्द अलेखु ६० शब्द अनाहत
नित करत सोवत जागतएक ॥ सुनत होइ मतवार बुधजनु मधु
पिये अनेक ६१ जोजो रव संसारके सोसब तामेंजानु ॥ मंगल
मन चित द्वैत नहिं यहधौं कौन प्रमानु ६२ सात स्वर्ग बसि
जन्म लहि पावै कर्म बिभाग ॥ सुख दुख मान अमानभव विधु
आतम अनुराग ६३ कोटि भार हाटक धस्यो रतीएकपरस्वाय ॥
जानो सबको मोल तिमि ब्रह्मजीवके भाय ६४ अक्षर एकै रूप
है मात्रारूप अनेक ॥ सोमाया गुण तत्त्व बुध अक्षर ब्रह्म विवेक
६५ बीरब्रती रणचढ़ि लरत पद पाछे नहिंदेत ॥ तथा प्रज्ञस-
बीग मत दृढ़ता करि गहिलेत ६६ निज पति मरण बिलोकि
तिय मोह बिवश सतिनेह ॥ समुझायो मानत नहीं जारत पति
सँग देह ६७ ज्ञानवान गहि सत्य मत तैसे त्यागत नाहिं ॥
दृढ़ करि ध्यावत आतमहिं पूरण पदहि समाहिं ६८ मेरे मत
निरगुण सगुण दोनों आतम ध्यान ॥ गुणन होत तौ निगुण
को सूझै पूरणज्ञान ६९ अज्ञानीको ज्ञानविद बिनआतम सुवि-
चार ॥ अनुभव सिद्धि स्वभावहै कर्त्ता कर्म विहार ७० जानिआ
तमा बोधदा बहुरि भुलानेअज्ञ ॥ ताहिप्रबोध्यो ज्ञानमत होअ-
जान अरुप्रज्ञ ७१ वृक्ष बदरिफल कीरगहि कामनगयोकुडाय॥
बीजगिरे जामतभयो सूर भूमिजलपाय ७२ जोपि अंश न बीज
में परमातमको तात ॥ तौकस बाढ्यो फलफल्यो यों सबजग
दरशात ७३ मीनउदकते रहित फिरि जियत न कोटि उपाय॥
मंगल नर जड़ता बिवश हिततजि अहित भुलाय ७४ चुम्बक
देखे लोहके करत चेष्टभाव ॥ मंगलमन लहिज्ञान हितु तज्यो
न नीच स्वभाव ७५ जड़तेऊ प्रीतम गुणत सुनत न देखतदेह ॥
शुचि इन्द्रीपाये मनुज बसत शत्रुकेगेह ७६ काम क्रोध लोभा-
दिको जानत सुखदा मित्र ॥ क्यों समुझाऊँ जीव कहँयहविष-

रीत चरित्र ७७ मोहपिंजराद्दुखसुख हैकपाट भ्रमयंत्र ॥ जीव
सिंहताबश परयो तोरत होइ स्वतंत्र ७८ स्वाद विषयको विष
सरस खात मीठ गुणकाल ॥ जानि चवत तूजीव क्यों ज्याउ
देव त्रैपाल ७९ विषयस्वाद भावत हृदय जबलगि जीवहि चा-
हि ॥ ब्रह्मसुखहि निरखत चतुर तबलगि कैसेहुनाहि ८० कोटि
बानवे श्वासकी नर आयुष परमान ॥ अधिक एकश्वासा मनुज
जीवत नाहिं सुजान ८१ षट श्वासाको एकपल गुणी दिवस
निश्विश्वास ॥ षटशत सहस इकीसमें गत श्वासा विश्वास ८२
अंत आदि याविधिवहै जीवतजे जोदेह ॥ जीवै यकशत बीसही
वर्ष चतुर न सँदेह ८३ मनमथि व्यंग विचारकृत दूषत शास्त्र
निवेश ॥ मुक्ति चहत कर्तव्य बिनु तजन विभूति बिर केश ८४
पापीपाप न परिहरै धर्म संगको हेरि ॥ तदपि दुवितर्क चितरहै
चिंततपापहि फेरि ८५ श्रद्धाबिन पूजननहीं जप न बिनाअनु-
राग ॥ मोक्ष न आतमध्यानबिनु माया ईशविभाग ८६ औरे-
नको शिक्षा करत निजकरणी परित्यागि ॥ शिक्षक अंध विहीन
चष बाट बतावत जागि ८७ लघुता गुरुता कारणहुं एकशब्द
की रीति ॥ शब्दविचारै ज्ञानमय पूरणब्रह्म प्रतीति ८८ शब्द
तुल्य नहिं मंत्र शुभ गायत्रीदृढ़ नाहिं ॥ धर्म बुद्धिमय शब्दसो
ब्रह्मज्ञान के माहिं ८९ कलिमल तूल समान है शब्द धनंजय
सिद्धि ॥ ज्ञान बामताशब्दमें लवलाये हितवृद्धि ९० जोपैजन्म
भरि कुमगमें विचरयो नर वपुपाय ॥ तौ पशुते जड़ मनुजसो
कहा मोक्षकोभाय ९१ जुरैं अंधदश पांचजहँ तहांजाय यकनैन॥
मानत झूठहु सत्यवत छलयुत ताके बैन ९२ तिमि दम्भीकी
बातसुनि भूलत विषयक प्रानि ॥ जोसूझत बूझत तबै अबकृत
मुद दुखजानि ९३ शंकर मनमें क्षोभभो काम बाण को बीर ॥
को बपुरे नर नारिभव कामी कुटिल अधीर ९४ संयम इन्द्री
वशकरब यासम द्वितिमनकोइ ॥ जोसाधकगतदम्भजन मोक्ष
होइगो सोइ ९५ जीवनकी आशा न डर भय न कालकोचित ॥

सम्यक विधि निज आतमा कृत ऊरधमग नित्त ९६ जो योगी निज शब्दकी परखि रंगगति लेइ ॥ भवावर्त्त महँ चतुरबुध सो न सत्यपग देइ ९७ ब्राह्मण क्षत्री वैश्यअरु शूद्रवरण येचारि ॥ इनकी दुविधा ज्ञानमत पंडितलेहिं विचारि ९८ विष्णुमयी जग जानिकै गहै वैष्णव पाव ॥ सत्य शब्द ध्यावनकरै अंत स्वपद कोभाव ९९ यों सिद्धांतहि जानिकै मंगलमन भजु राम ॥ इत उतदोनों ओरसुख परिपूरण विश्राम १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्त्तायांसर्वागमबुद्धिकर्त्तायांमंगलविनोदकायांमंगलदासविरचितायांभक्तिमार्गनिवारणपरवर्णनोनामतृतीयश्शतकः ॥ ३ ॥

दो० ॥ कोटि जन्म तीरथ भजै लाख जन्म थिर ध्यान ॥ मंगल नहिं विश्वास दृढ़ कहां लहै कल्यान १ बिन सतिभाव न सिद्धि कोउ पूजन जप जगहोत ॥ सत्यभाव मंगल सदा मंगल करत उदोत २ काष्ठ मृत्तिका उपलकी मूरति महँ नहिं देव ॥ शुद्धभाव विश्वास दृढ़ फलदा सद्गुरुभेव ३ दर्पण पूषण दिशि लखत उमिलत ज्वाल समूह ॥ तिमि मन आतम ओर लखि त्याग न विषयक जूह ४ विषय वासना चंचला यथा स्वैरिणी बाम ॥ कोटि पतिव्रत धर्म सुनि परपति निरखिसकाम ५ छल प्रपञ्चकृत गुप्तही प्रकटत कालहि पाय ॥ प्रीति भंग तब होतिहै विष्णु पौंडूकभाय ६ काकवेष करणी सुकुल पावन यथा मराल ॥ परमातम घर हंसफल पावन बायस बाल ७ जिमि किसान निजखेतमें जो बोवत सोहोत ॥ ऐसे काया खेत में करणीकरत उदोत ८ मित्रद्रोह परतिय रमण मिथ्या साखि अलाज ॥ अनघाप बड़बढ़िकरत ऊपरभक्तिसमाज ९ उरभुजादि मालाधरे गलथिल शालिग्राम ॥ मिथ्याछल निवसत हृदय रगये यकनाम १० अंतर बाहिर एकरस शतभावी शुचिसाध ॥ पर उपकारी ज्ञानमय तापद मन आराध ११ ज्यों ज्वारी निज दाउँको करत चिन्तमण सत्य॥ औरनसों स्वारथ नहींतस